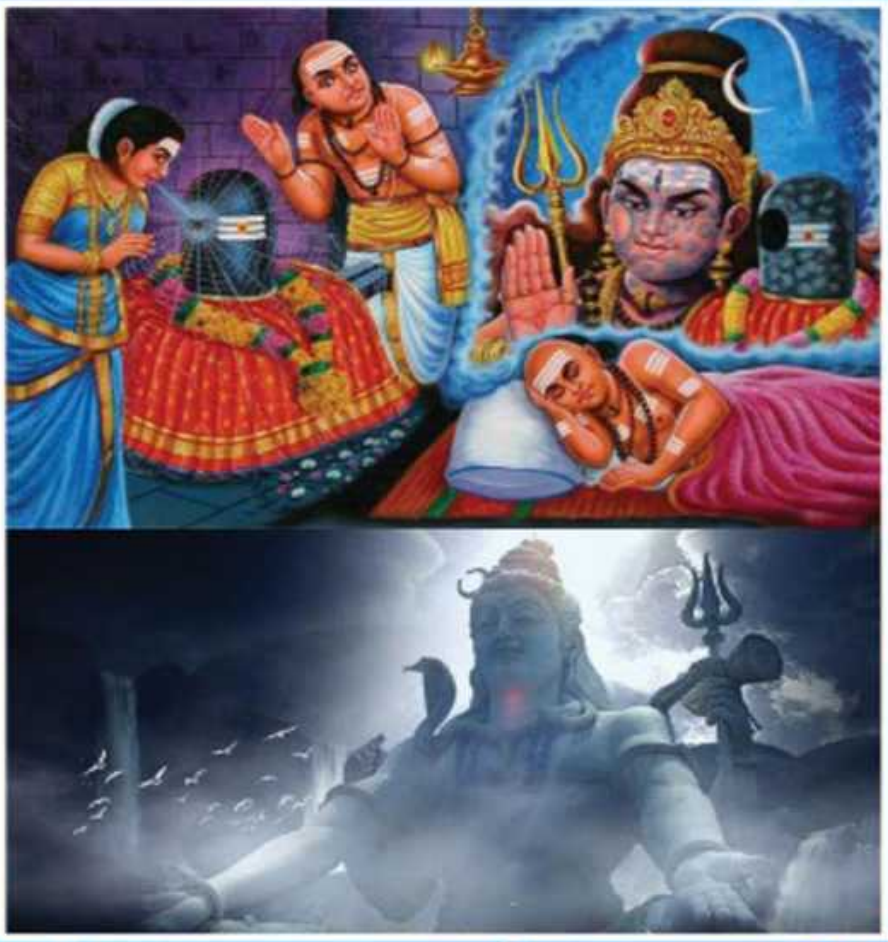
वर्ष 27 अंक 7 जुलाई - 2025 ₹ 3

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी।

शबरी

SHABARI SIKSHA SAMACHAR शिक्षा समाचार

अहिन्दी भाषा प्रदेश तमिलनाडु के सेलम से 27 वर्षों से निरंतर प्रकाशित एक मात्र मासिका



शिव भक्ति से भरे रहे, नित तिरुनीलनक्कर ।
शिव ज्योति उसमें मिलकर, शिव बने नायनार ।।

PRAVEEN UTTARARDH

Just ₹540/- Only



Planned and perfect presentation.
Impressive and easy language.
Presents the Language in its own way.
Perfect companion for Students.
Prefer Shabari Guides.
Feel the difference.
Finest way to pass the exams with confidence.

SHABARI SHABDHA SAAGAR

Trilingual Dictionary

1632 Pages

Just ₹750.00 only

51,000 Words

ஹிந்தி
ஹிந்தி
ஆங்கிலம்
தமிழ்
அகராதி



கற்போர் கற்பிப்போரின்
சொல் வளம் பெருகிட
ஹிந்தியோடு தமிழும் ஆங்கிலமும்
தங்களின் நுனி விரலில் தவழ்ந்திட
51,000 சொற்களின் அணிவகுப்பு
சபரியின் தரமானதோர் படைப்பு

வாழ்க்கை பயனுற வானம் வசப்பட
வார்த்தைகளால் வளம் பெற்று சிறந்திட

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी
SHABARI SALEM
ज्ञानात् परं सुखम्
पढ़ो मन भरके
शबरी
शिक्षा समाचार

Vani Vikas 1st Convocation Ceremony
(See Page No.: 50)

वर्ष 27, अंक 07 | मूल्य ₹ 3/- | जुलाई - 2025

प्रधान संपादक
एम. वेंकटेश्वरन
संयुक्त संपादक
आर. जयकरन
सहायक संपादक
आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय
Shabari Siksha Samachar
R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक
Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES
Whatsapp : 9443165414
Office Phone : 9842765414
Office Phone : 9443365414



VANI VIKAS NUMBER
0427-4265414
0427-4552100
Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
दोस्ती 7
अनकही 8
ईश्वर-स्वरूपा माँ 10
सीख 12
मत बनो 13
करें योग रहें निरोग 14
व्यक्ति के दो चेहरे 15
मोनोपली 16
स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस. ने भरा 17
गाँव हमारा- शहर तुम्हारा 18
पिता का फर्ज... !! 19
हमारी पीढ़ी के खोए हुए मूल्य ... 20
आज के गाँव 21
जरूरत से ज्यादा चतुराई 22
शोभा चाँदी की 23
मीठा दर्द 23
मेरे देश की पावन धरती 24
मंजिल 24
पेड़ ही पेड़ लगाओ 25
जय भारतमाता 25
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
दो कविताएँ 30
एक पानी मिला 31
मैं हार नहीं सकती, ना ही हारूँगी । 31
भगवान् 32
उनके नैना जैसे जादू 32
अलबेला हुआ मौसम 33
करूणामई माँ प्रकृति 33
सपने मुझे जगाते हैं 34
पूरे गाँव ने देखा 34
योग हमारी है पहचान 35
शबरी 35
संस्कार से चरित्र श्रेष्ठ बनते हैं 36
अज्ञात यात्रा 36
मेरी विश्वास 37
सुस्वागतम 37
सपना 38
आज के रिश्ते 38
खुशियों की तलाश 38
पाक प्रेमियों को मार धूल में मिलायेंगे 39
मैं क्यों कुछ कर ना सकूँ ? 39
हायकू 40
रथ यात्रा की महिमा 40
पाठकों के पत्र 41
नवांकुर 42
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्. 44
தமிழமுது 45
அருள் உலா 46

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஜூலை-2025	20-07-2025	01-04-2025 to 31-05-2025	05-06-2025
அக்டோபர்-2025	26-10-2025	01-07-2025 to 31-08-2025	05-09-2025
ஜனவரி-2026	18-01-2026	01-10-2025 to 30-11-2025	05-12-2025
ஏப்ரல்-2026	19-04-2026	01-01-2026 to 28-02-2026	05-03-2026

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.
★ D.D. *மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.*

our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

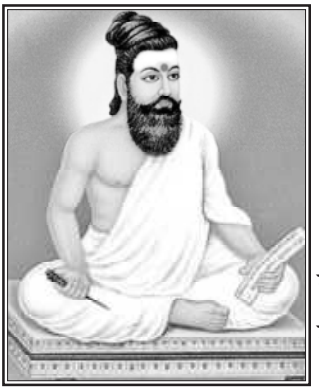
मानव का संबंध इस दुनिया से माता-पिता से होता है । माता और पिता सबसे पहले परिवार का मतलब समझाते हैं । उनके कारण अन्य लोगों से संबंध जुडता है । बच्चा जब आगे बढता है तब अपने समाज से वह संबध जोड लेता है । मित्र बनते हैं । कुछ सहपाठी होते हैं । कुछ ऐसे भी होते हैं जो बादल जैसे कभी आते हैं कभी वे दूर चले भी जाते हैं । लोगों का संबंध या रिश्ता मानव मन को बहुत ही मजबूत और जीनेलायक बना देता है ।

विवाह का बंधन उसे नया परिवार देता है । पत्नी और बच्चों के साथ उसका जीवन एक नया आयाम अपना लेता है । पिता को दादा का सम्मान देता है । परिवार बन जाता है । सुखमय समझ लेता है । लेकिन असल में वह अपने काम में तल्लीन हो जाता है । निजी कम्पनी में हो या कोई और कारोबार में हो वह अपने आपको उसका गुलाम बना लेता है । छुट्टी नहीं मिली, समय नहीं मिला, कम्पनी हो या अपना कार्य भार उससे कभी फुरसत नहीं मिलता है । अनेकानेक कारण बनाकर वह अपना जीवन पूरी तरह से नष्ट कर लेता है ।

जब वह अपने काम से दूर आ जाता है, सेवा निवृत्त हो जाता है ? तब साथ देने के लिए सिर्फ परिवार के सदस्य रह जाते हैं । काम और अपने पद को जो समर्पण भाव दिया था वह किसी काम का नहीं रह जाता है । परिवार से जो बंधन बनाये रखना था उसे कभी नहीं निभा पाया । अब जब परिवारवालों से प्यार बढाने का मौका पाता है तब तो उसके बच्चे काम में लग जाते हैं और वे समय नहीं दे पाते हैं । जिन्दगी में पद पाना और उसका सुख पाना गलत नहीं है । लेकिन उसके लिए पारिवारिक सुख को दूर रखना निस्संदेह गलत बात है ।

परिवार और प्यार दोनों को उचित समय देना जीवन को आनंदमय बना देता है । स्वयं ही नहीं अपने मित्र तथा बंधुजनों को भी यह बात बता दीजिए कि परिवार ही जीवन है । जीवन परिवार के बिना कुछ भी नहीं है ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!



अनमोल वचन

दृष्टि

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर का कहना है – कौन है यह ? देव नारी है ? मोरनी है ? कानों में कर्ण फूल पहनी इस महिला को देखकर मन रीक्ष क्यों जाता है ?

उसकी तीखी नजरों को मैं देखा । जब उसकी निगाहें मुझसे मिली तब ऐसा लगा कि वह अकेली नहीं एक बहुत बडी सेना लाकर मुझपर वह वार कर रही है ।

यम को मैं पहले बिलकुल नहीं जानता था । लेकिन अब मैं जान लिया । वह नारी के रूप में आकर उसकी आँखें रूपी तीर से मार गिराता है ।

महिला का स्वरूप बहुत ही मनमोहक है । नारीत्व एक सुखमयी प्यारभरी चीज है । लेकिन उसकी नजरें ज्यादातर जान लेवा ठहर जाती हैं । उसका गुण और बुद्धि से आँखें बिलकुल अलग है । नजरें जान लेवा बन जाती है ।

जान लेवा यम है ? मुझसे रिश्ता जोडनेवाली वह नयन है ? एक अजीब डर देनेवाली एक हिरण है ? मन में महिला को देखते ही ये तीन प्रश्न आ जाते हैं ।

अगर उसकी भृकुटि टेढी न होकर सीधी होती तो वह मेरे मन को इतना घायल नहीं कर पाती । मुझे नहीं सताती ।

उस लडकी के वक्ष स्थल जो स्थिर है उस पर पडी साडी ऐसे लग रही है जैसे मद ग्रस्त हाथी के मुँह पर लगानेवाला एक कवच सा लग रहा है ।

युद्ध क्षेत्र में वैरी को डरा देनेवाली मेरी वीरता तथा क्षमता इस प्रेमिका के माथा देखकर पूरी तरह से नष्ट हो जाती है । उसकी सुंदरता के सामने मैं हार जाता हूँ ।

हिरणी समान डरनेवाली नजर और मन में शरम को अपना आभूषण बना लेनेवाली इस महिला को और भी आभूषण पहनाने की क्या जरूरत है ?

मधु या शराब का सेवन करने से नशा चढती है । लेकिन रूपवती नारी की दृष्टि मधु से भी ज्यादा नशा भरनेवाली है ।

दोस्ती

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु



कुछ रिश्ते ऐसे हैं जो भगवान के हाथ है
कुछ रिश्ते ऐसे हैं जो भाग्यवान के हाथ लगते हैं
ढूँढ ढूँढ कर थक जाओगे कहीं हार कर रुक जाओगे
सुन लो कान खोल कर तुम अगर ऐसा मित्र पाओगे ।



फेस बुक पर जो मित्र का सम्मान पाता है
साथ नहीं देता है सिर्फ लाइक और कमेंट देता है
आते जाते जिसे तुम मित्र समझ लेते हो अरे समझ लो
मित्र नहीं साथ घूमनेवाले घूमनेवाले शख्स होता है ।



साथ बढ़ते कुछ लोग स्नेह बरसाते कुछ लोग
साथ नहीं आते अंत तक बीच में छूट जाते हैं
जब तक कुछ अपना काम है या कुछ पाना है
साथी का नाम लेकर कुछ लोग साथ घूमने लगते हैं ।



दोस्ती वह नहीं है जो चाय के या शराब के साथ सुख भरें
दोस्ती वह नहीं है जो आगे मधुरता भरे पीछे घोर जहर
दोस्ती वह नहीं है सिर्फ सुख की घटियाँ अपनावें
दोस्ती वह नहीं है जो मिलने से बने रहे हैं बिछड़ने पर न हो ।



दोस्ती वही है जो दूर रहकर भी सदा पास रह जावे
दोस्ती वही है जो नर नारी का भेद बिलकुल न जाने
दोस्ती वही है जो संप्रदाय को दूर रखकर अभिप्राय भेद ना करें
दोस्ती वही है जो दिल की बात को दिल तक ले जावे ।



दोस्ती वही है जो सदा कपट शंका से दूर रह जाती
दोस्ती वही है जो सपने में भी कभी नष्ट नहीं पहुँचाती
दोस्ती वही है जो दोस्त को वैसे ही अपनाती
दोस्ती वही है जो जन्म भर साथ देती सदा सुख पहुँचाती ।

अनकही

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

नौ वर्षों की नैना मेरा हाथ पकड़कर चल रही थी, ट्रेन में यात्रा कर रहे लोगों का ध्यान आकर्षित कर रही थी । अंश, उसका भाई, बैग पकड़कर हमें सीट तक ले जाने में सक्षम था । मैं उलझन में था, सोच रहा था कि क्या मैं बच्चा हूँ या ये मेरे पोते हैं ? मेरे पोतों का जीवन मेरे बचपन के दिनों से बिलकुल अलग है ।

अंश ने बैग रैक पर रख कर, हमें सीटें दिखाते हुए बैठ गया । ''आप आराम से बैठे हैं, दादा ?'' ''हाँ, ओह, माफ़ कीजिये, हमें वास्तव में बहुत खुशी है कि दादा वर्षों बाद घर आ रहे हैं ।'' ''यह हमारे लिए एक सपना था कि दादा और दादी हमारे घर में कुछ दिनों के लिए हमारे साथ रहें ।'' ''आप हमेशा व्यस्त रहते थे और वहाँ आने से मना कर देते थे ।'' ''अब मैं आपको महीनों तक नहीं छोड़ूँगी ।'' ''चिंता मत करो, दादी एक सप्ताह के भीतर आपसे जुड़ जाएगी ।'' नैना ने अपने इशारों और सुंदर शब्दों के माध्यम से अपनी खुशी व्यक्त की । ''ओह, मेरी नैना, तुम मुझे ऐसा महसूस करा रही हो जैसे मेरी माँ मेरे जीवन में वापस आ गई है ।'' मैंने अपने मन में कहा, और अपने चेहरे पर एक प्यार भरी मुस्कान लाई । दोनों अपने मोबाइल फोन के साथ बैठे थे, अपने ही दुनिया में खोए हुए थे ।

मुझे भारतीय रेलवे प्लेटफ़ॉर्म और ट्रेन की स्थिति से बहुत खुशी हो रही थी । हाँ, मेरे देश में जबरदस्त बदलाव हो रहे हैं, जो अब एक विकसित देश साबित हो रहा है । सालों पहले, जब मैं अपने माता-पिता के साथ यात्रा करता था, ट्रेन की यात्रा हमें कोयले के कारण काला कर देती थी । अब यह काफी आरामदायक है ।

इसी के साथ, मुझे एहसास हुआ कि मैंने अपनी स्कूली शिक्षा, कॉलेज और करियर पूरा कर लिया है, और अब मैं एक रिटायर्ड जीवन जी रहा हूँ । मेरी आँखें डिब्बे के दूसरी तरफ बैठे जोड़े को देखने लगीं । वे दोनों युवा थे, लगभग बीस साल के । लड़का शर्मीला था, लगभग लड़की को गले लगा रहा था । लड़की बहुत सुंदर थी । मैं अपने किशोरावस्था के दिनों में चला

गया, और मेरी शांति मेरे सामने आई । मैं अपने ही दुनिया में था, मेरे और मेरी शांति के साथ ।

''क्या आप मुझे थोड़ी जगह दे सकते हैं ताकि मैं चल सकूँ ?'' ''धन्यवाद ।'' आवाज़ ने मुझे वास्तविकता में वापस ला दिया । एक महिला अपने पोतों के साथ मेरे सामनेवाली सीट पर बैठ गई । मुझे आश्चर्य हुआ कि मैं घंटों से अपनी ही दुनिया में खोया हुआ था । सभी चार बच्चे अपने मोबाइल फोन के साथ व्यस्त थे । मैं उस लड़की को फिर से देखना चाहता था, और मेरी आँखें मुझे वहीं ले गईं ।

''तुम उन्हें क्यों घूर रहे हो ?'' मैंने फिर से आवाज़ सुनी और जवाब दिया, ''मैं अपने पहले प्यार की याद में खो गया था ।'' ''जहाँ भी मैं प्यार देखता हूँ, मैं अपनी शांति को देखता और महसूस करता हूँ ।'' ''मैं उससे बहुत प्यार करता था और तब व्यक्त नहीं कर पाया था । उसे बताने के लिए पर्याप्त साहस नहीं था ।''

''अगर आपका प्रेम शांति है, तो आपने किसी और से शादी क्यों की और बच्चे भी हुए, ये आपके पोते हैं, है न ?'' उसने मुझे इन शब्दों से थप्पड़ मारा । ''माता-पिता और समाज ने मेरे जीवन को'' ''केवल विचारों और सपनों में ही मैं अपनी शांति के साथ जीता हूँ । आपके भी पोते बहुत प्यारे हैं ।''

''हाँ, मेरे भाई के बच्चे हैं ।'' ''मैं अभी भी कुमारी हूँ ।'' ''क्या ! आप अभी भी कुमारी हैं ?'' ''लेकिन क्यों ?'' मैंने उससे पूछा ''मैं भी अपने प्यार को व्यक्त नहीं कर पाया, सेन्दिल ।'' ''अरे ! आप मेरा नाम कैसे जानते हैं ?'' ''क्या आप शांति हैं ?''

''हाँ ।'' ''मैं इतना भाग्यशाली नहीं हूँ कि जीवन में और इस ट्रेन में आपके साथ यात्रा कर सकूँ; मेरा स्टॉप नजदीक आ रहा है, मुझे ट्रेन से और आपके जीवन से जाने दो ।'' मैं स्तब्ध था, और ट्रेन चल पड़ी । मैंने पूरी ताकत से चिल्लाया, ''अरे ! मुझे अपना नंबर दो ।'' ''जीवन को पहले जैसा ही रहने दो ।'' उसने जवाब दिया और चली गई । मैंने अपने प्यार को फिर से देखा, लेकिन पा नहीं पाया ।



ईश्वर-स्वरूपा माँ

– श्री. नीरज जयस्वाल,
कोलकत्ता, प.बं.

धरती पर यदि कोई व्यक्ति है जो मनुष्य को उसके द्वारा किए गए कर्मों को माफ कर उसे फिर से जीने के लिए यदि उत्साहित तथा आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा दे सके, उसके गुनाहों को माफ करते हुए उसे पुनः अपनी गलती को माफ कर आगे वैसी गलती न करने के लिए सीखा सके तो वह एक मात्र इंसान है उसकी माँ । माँ एक ऐसा शब्द जिसे न शब्दों में आँका जा सकता है न शब्दों में पिरोया जा सकता है जिसकी न कोई उपमा न आज तक ले सका न आगे चलकर ही कोई उसकी जगह ले सकता है वह होती है माँ । जिसकी स्तुति स्वंय तीनों लोकों के स्वामी नर–नारायण करें जिसकी गाथा वेद–पुराण करें उस पूजनीय माँ को मेरा प्रणाम ।

किसी व्यक्ति के जन्म से उसे नौ महीने से पहले जाननेवाली माँ को हम जैसे तुच्छ प्राणी न कभी समझ सके हैं न आगे कभी समझ ही सकेंगे । जो हर दुःख–तकलीफ को सहते हुए बस एक ही आस से अपने सम्पूर्ण जीवन को बस यूँ ही बीता देती है बस उसकी एक ही आशा बनी रहती है उसकी संतान को कभी तकलीफ न हो पाए उसके लिए उस ममतामयी–ईश्वर स्वरूपा माँ को ईश्वर के सामने अपनी संतान की बरक्त के लिए भी उसके सामने अपनी झोली को फैलाते देखा गया है । एक माँ समान ईश्वर को अपने लिए नहीं अपने बच्चों के लिए ईश्वर के सामने झुकते देख फिर भी यदि उस संतान को उस माँ के लिए उसके हृदय में ममता नहीं आती तो वह संतान कहलाने के लायक नहीं है । उसे यदि उस माँ के लिए उसके हृदय में आत्मग्लानि का भाव नहीं आ पा रहा है तो उसे पुत्र या पुत्री कहलाने का कोई अधिकार नहीं है ।

ईश्वर ने भी उस माँ के हिस्से में केवल दुःख ही दुःख दे रखे हैं लगता है सुख उस माँ से कोसों दूर है । यह सच है ईश्वर अर्थात् स्वयं तकलीफें सहकर

अपने भक्तों के जीवन का उद्धार करनेवाला । ईश्वर ने जब-जब धरती पर मानव के रुप में अवतार लिया उन्होंने असंख्य दुःखों को सहा और भक्त भी उनके समक्ष अपनी-अपनी कामना लेकर उनके पास चाहे रोते हुए पहुँचे, या फिर दुःख के घने संकटों से घिरे हुए वे उनके समक्ष आए तो बस स्वयं की ईच्छा पूर्ति के लिए उन्होंने कभी भी उस मानव रूप धारी ईश्वर को समझने की चेष्टा नहीं किए कभी भी यह नहीं सोचा जिनके कारण उनके स्वयं के जीवन से दुःखों के बादल छँट रहे हैं उनके लिए भी कुछ सोचा जाए । यदि किसी ने सोचा भी तो बस धन से उनके द्वारा किए गए अहसानों को चुकाना चाहा परंतु मानव रूप धारी उसके भूखे नहीं रहे वे तो यदि भूखे रहे तो बस प्रेम के । ठीक उसी रूप में आज हमारे समक्ष हमारी माँ है जो हम सभी के लिए हर चीज सहकर बस हमें ही खुश रखना चाहती हैं । बदले में हम क्या देते हैं उस माँ को क्या हम उनके द्वारा किए गए असंख्य अहसासों को क्या कभी चुका पाते हैं । किसी की भी माँ को अपने सुख के लिए धन-संपत्ति नहीं चाहिए होती है उस माँ को बस अपनी संतान के चेहरे पर खिलनेवाली हँसी चाहिए होती है । परंतु हम नरकगामी संताने उस माँ को बस यातनाएँ देते रहते हैं । उस माँ को कष्ट देने की यातनाएँ अपनी जन्म के समय से देते रहते हैं । यह सिलसला यही नहीं समाप्त होता है संताने अपनी स्वयं की ईच्छा पूर्ति के लिए उस माँ को पल-पल भर कोसते रहते हैं जब तक उनकी ईच्छाएँ उनकी माँ पूरी नहीं कर देती है । हम नादान सोचते हैं कि माँ रोक रही होती है अपने स्वार्थ के लिए परंतु उनका सोचना बिलकुल ही निराधार होता है क्योंकि जहाँ हम एक-दो वर्ष के सुख के बारे में सोच रहे होते हैं वहीं वह माँ उसके पूरे जीवन के बारे में सोच रही होती है । वह सोचती है कि यदि कल को मैं न रही तो संतानों द्वारा लिए गए उसके फैसले से उसके बच्चों का क्या होगा । इसी आपसी नासमझी से माँ तथा संतानों के बीच अक्सर ही फासले बढ़ते चली जाती है । माँ कभी भी अपने बच्चों की सलामती के सिवाय कुछ नहीं चाहती ।

हम संतानों को यह बात सोचनी तथा समझनी चाहिए अपनी-अपनी माँ के दूरगामी सोच के लिए । उनकी जितनी प्रशंसा की जाए कम ही होगी । उनके ऋणों से न हम संताने कभी उत्तीर्ण हो सके हैं न आगे कभी हो ही पाएँगे ।



बोधकथा

सीख

– श्री. राजेन्द्र परदेसी,
लखनऊ, उ.प्र.

भगवंत नगर में देवतादीन नाम का एक व्यक्ति रहता था । वह मूर्तियाँ बनाकर बेचता था । उसी से अपने परिवार का भरण पोषण किया करता था । उसका एक पुत्र था । जिसका नाम गयादीन था । जब बेटा बड़ा हो गया तो पिता ने उसे भी मूर्तियाँ बनाना सिखा दी ।

देवतादीन की मूर्तियाँ जहाँ दो रुपये में बिकती थीं, वही बेटे की मूर्तियाँ उतनी अच्छी न होने के कारण एक रुपये में ही बिकती थी । इसीलिए देवतादीन अपने बेटे को मूर्तियाँ बनाते समय उसकी त्रुटियों को बताता रहता था । गयादीन अपने पिता की बातों को ध्यान से सुनता और उसके निर्देशों के अनुसार सुधार करता । धीरे–धीरे गयादीन की कला में निखार आने लगा । उसकी मूर्तियाँ अब पाँच रुपये में बिकने लगीं । देवतादीन फिर भी बेटे को उसकी कमियों को बता समझाता रहता ।

एक दिन गयादीन खीझ कर पिता से बोला – मेरी मूर्तियाँ आपसे अच्छी बनती हैं, तभी तो पाँच रुपये में बिकती हैं । आपकी तो दो रुपये में ही, फिर भी आप मेरी मूर्तियों में त्रुटियाँ निकालते रहते हैं ।

बेटे की बात सुनकर कर देवतादीन ने कहा – बेटा ! युवावस्था में मुझे भी तुम्हारी तरह अहंकार हो गया था । इसी कारण आज तक दो रुपये में ही मेरी मूर्तियाँ बिकती हैं । मैं चाहता हूँ कि तुम्हें अपनी कला पर अहंकार न हो । तभी तुम श्रेष्ठ कलाकार बन सकोगे ।

पिता की बात सुनकर गयादीन अपनी कही बातों पर बड़ा लज्जित हुआ । वह पिता के चरणों पर गिरकर बोला – आज आपने मेरी आँखे खोल दी । मुझे भटकने से रोक दिया । मैं आपकी यह सीख जीवन भर याद रखूँगा ।

बेटे की बात सुनकर देवतादीन बहुत खुश हुआ कि आज मेरे बेटे के अन्दर महान होने का अहंकार दूर हो गया ।



मत बनो

– श्री. मदन सुमित्रा सिंघल,
शिलचर, असम

धर्मभीरु साधारण परिवार के मुखिया लोगों के सामने तो भोलेभाले उदमी राम धार्मिक लगते थे तो उनकी पत्नी श्याम सुंदरी बेहद चालाक किंतु वृद्ध पति से सुंदर थी ।

मजे की बात यह कि पिता बहू बाप बेटी माँ बेटे बहन–भाई यदि आपस में बात करते तो उन्हें शक होता था डाँट देते थे कि यह उचित नहीं ।

सब एक दूसरे से दूरी बनाए रखते । डरते थे कि किसी को शक न हो जाए । घर में ही बँधुआ बनकर रहते । अब बड़ा भाई शिकारी मल रेहड़ी लगाकर आता तो देखता कि सब दुबके पड़े हैं । सब आलसी बन गए । पाँचवी आठवीं तक पढ़े लेकिन एकलखोर स्वार्थी होने के कारण अन्य लोगों से कट गये । न खुद का व्यक्तित्व विकास हुआ न ही परिवार का ।

बहुएँ पढी–लिखी आयी तो जमाई भी आये लेकिन उन पर बारी–बारी से ड्यूटी के अनुसार नज़र रखी जाने लगी ।

किसी के लिए कोई भी कुछ करने के लिए तैयार नहीं सिर्फ अपनी दरिद्रता का रोना रोकर दो–चार महीने घी दूध खा आते फिर उसी हाल में जीने के लिए मजबूर हो जाते ।

दो पढी–लिखी बहुओं ने अपने पति एवं औलाद को संभाल लिया तथा अलग रहने लगी ।

माँ–बाप दोनों लंबी बीमारी के बाद बिना इलाज स्वर्ग सिधार गये । लेकिन शक की घड़ी उन्हें थमा गये ।

शास्त्री जगदंबा नाथ आकर पूजा अर्चना करते हुए कहा कि शक दूसरों पर कभी मत करना बल्कि खुद पर भी मत करना इसका कोई इलाज नहीं है । रोज़ाना घूम–घूम कर घर में कीर्तन करो ताकि आलसीपन एवं दरिद्रता अपने आप छूट जायेगी ।

चालू बनना है तो व्यापार में बनो परिवार में नहीं ।



करें योग रहें निरोग

– श्री. शुभम पांडेय 'गगन',
अयोध्या, उ.प्र.

योग हमारी ऋषियों द्वारा प्रदत्त एक अमृत है जिसका पान करके हम अपनी समस्त बीमारी, रोग, मानसिक स्थिति तक को सुधार और सम्भाल सकते । यह एक अद्भुत साधन है जो व्यक्ति को दैवीय बना सकता है । कुंडली जागृत या किसी चीज़ पर नियंत्रण पाने की कला योग और ध्यान से शुरू होती है । ऋषि पतंजलि ने योग दर्शन की शुरुआत या रचना की । माननीय प्रधानमंत्री जी 21 जून को विश्व भर में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने का प्रस्ताव दिया जिसे सबने माना ।

हमारा सौभाग्य है कि यह अनुपम ज्ञान हमारे पूर्वजों की देन है ।

योग में वह ताकत है जिससे न केवल आप अपनी बीमारी पर विजय प्राप्त कर सकते अपितु अपनी मानसिकता और मन को नियंत्रित कर सकते । यह वास्तव में अदभुत है । योग की शक्ति से हम सालों साल युवा अवस्था प्राप्त कर सकते और अपनी ज्ञानेंद्रियों को वश में कर सकते । योग से हम कुंडली जागृत कर सकते जिससे न केवल हम ब्रह्मांड के रहस्य जान सकते अपितु सालों-साल अपनी आत्मा शरीर से निकाल कर लाखों साल जी सकते ।

कुछ विभिन्न आसान करके हम कई मर्ज़ का उपचार कर सकते ।

शवासन –

इसकी सहायता से हम उक्त रक्त चाप, अनिंद्रा और तनाव दूर कर सकते । इस आसन को करने के लिए पीठ के बल लेटकर अपनी मांसपेशियों को ढीला छोड़ दे फिर धीरे-धीरे अपनी सासों को आने दें ।

भुजंगासन –

इस आसन में पेट के बल लेटकर अपनी कोहनियों को मोड़ ले और पेट के नीचे लाकर अपने शरीर के अग्र भाग ऊपर उठाएँ ।

यह आसन कब्ज, फेफड़े, रीढ़-हड्डी और पाचन हेतु अत्यंत लाभदायक है ।

ताड़ासन –

पंजे के बल खड़े होकर दोनों हथेलियों को ऊपर ले जाये और मोड़ ले । अर्थात् उनकी दिशा सीधे ऊपर की ओर रहे । यह आसन पिंडलियों की मजबूती, पंजे की मजबूती और शारिरिक वृद्धि हेतु कारगर है ।

योगमुद्रा –

पद्मासन में बैठकर दोनों हाथ को पीछे ले जाये और बाएँ हाथ से दाएँ हाथ की हथेली पकड़े । इसके बाद शरीर का आगे का हिस्सा स्वांस छोड़ते हुए भूमि पर टिका दे । ये आसान योनविकार, उदर विकार, कमर, पेट की चर्बी आदि को फायदा करता है ।

1. टॉन्सिल, गले की समस्या, पथरी, मूत्रपिंड समस्या आदि हेतु सुप्त बज्रासन आसान करें ।

2. ब्रह्मचर्य पालन हेतु मयूरासन करें ।

3. कमर दर्द, मूर्छा, स्नायु, मधुमेह और स्वप्नदोष, हिचकी, उल्टी, नेत्र विकार हेतु भद्रासन करें ।

4. मस्तक, गर्दन, पीठ, पेट, कमर, हाथ, पैर, घुटने आदि सब अंग मजबूत बनाने, पाचनशक्ति बढ़ाने, पेट की अनावश्यक चरबी दूर करने, शरीर तेजस्वी और फुर्तीला बनाने हेतु चक्रासन करें ।

5. स्त्रियों के लिए मासिक धर्म के विकार, गर्भाशय के तमाम रोग दूर करने हेतु धनुरासन करें ।

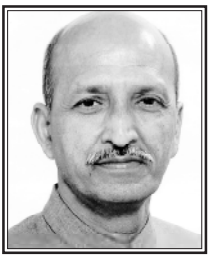
इसी प्रकार सूर्य नमस्कार, मर्कटासन, अनलोम विलोम, कपाल भांति जैसे कई योग है जिनसे आप स्वस्थ रह सकते ।



व्यक्ति के दो चेहरे

– श्री. गजानन पाण्डेय, हैदराबाद, तेलंगाना

व्यक्ति के दो चेहरे हैं
जो सच है,
वह न दिखता है
परदे में सब ढका–छिपा
धन का ही व्यवहार है
मोह–माया का संसार है ।
जल–प्रपंच व द्वेष भरा है
भीतर कुछ और बाहर कुछ
इन्हें परखना बहुत कठिन है
झाँसे में न तुम आना
भारी पड़ेगा मोह लगाना ।



मोनोपली

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

बड़ा विचित्र सा शब्द लगता है कभी कभी । किसी भी कम्पनी का मोबाइल और नैटवर्क हम प्रयोग करते हैं और उसके लिए पैसा देते हैं । मगर उसकी मोनोपली देखिए जब चाहा स्पीड कम, नैट वर्क गायब, महीना 28 दिन का बना दिया । इतना ही नहीं अगर आपने कोई प्लान एक वर्ष का लिया है और बीच में कभी रेट बढ़ गये तो आपका प्लान मोडिफाइ कर दिया और कभी दाम घटे तो पुराना प्लान चलेगा । जानते हैं क्यों, कन्ट्रोल उनके हाथ में है ।

बिजली, पानी, पाईप लाईन गैस, टीवी केबिल और भी न जाने क्या–क्या सब कुछ जिसमें भुगतान पहले हो अधिकतर सबमें यही हो रहा है ।

किसी कम्पनी का टी.वी., फ्रिज, कार, स्कूटर, बाईक या कोई भी सामान खरीदो, सर्विस कम्पनी का इंजिनियर ही आयेगा । सामान में कुछ कमी हो या न हो सर्विस विजिट चार्जेज देने पड़ेंगे । अगर आपने कहीं बाहर ठीक कराया तो आपकी वारंटी खत्म ।

आजकल आन लाइन व्यापार घर–घर तक घुस गया । हजारों कम्पनियों ने मकड़जाल की तरह जकड़ लिया । जिसमें अनेकों पैसा मंगाने के बाद सामान नहीं भेजती या खराब भेज देती हैं । कभी कभी तो पत्थर आदि भी आने की शिकायत भी पढ़ने को मिली । आप शिकायत करते रहें कोई जवाब नहीं यानि मोनोपली ।

सोशल मिडिया की बात कर लो । हमारे देश में आकर हमसे ही कमाना और मोनोपली उनकी चाहे जिस पर बेन लगा दो ब्लाक कर दो । किस कन्टैंट पर यह भी नहीं पता ।

पहले तो खुली छूट देकर आदत डाल दो फिर शुरू करो मोनोपली का खेल । अब देखिए फेसबुक ट्विटर जैसे प्लेटफार्म भारत सरकार को ही आँख दिखाने लगे ।

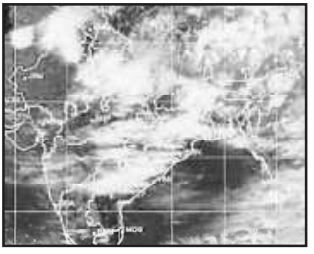
दोस्तो आज हम सब इसी मोनोपली के गुलाम हो चुके हैं ।

स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस. ने भरा हैं दम... !

– श्री. संजय एम. तराणेकर, इन्दौर, म.प्र.

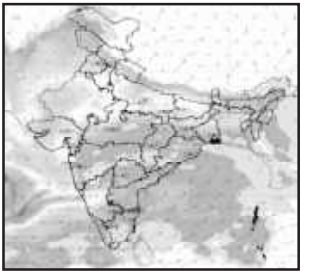


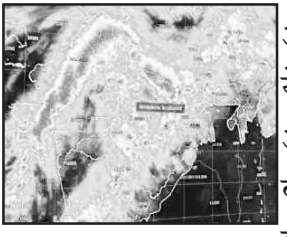
आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उठा हैं एक बड़ा कदम,
अभी स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस. ने भरा हैं दम ।
उन पाँच महिला विज्ञानियों ने विकसित किया है,
मौसम पूर्वानुमान प्रणाली को नया जन्म दिया है ।
स्थानीय स्तरों मौसम की सटीक माहिती मिलेगी,
कोई नुकसान नहीं होगा हँसी चेहरों पर खिलेगी ।



आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उठा हैं एक बड़ा कदम,
अभी स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस. ने भरा हैं दम ।
छः किलोमीटर के दायरे में मौसम के पूर्वानुमान,
क्षमता हासिल कर भारत दुनिया का पहला देश !
अब बदल जाएगा हर एक शहर का भी परिवेश,
मौसम पूर्वानुमान प्रणाली में अग्रणी हो समावेश ।

आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उठा है एक बड़ा कदम,
अभी स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस. ने भरा है दम ।
पिछले तीन वर्षों से इस पर चल रहा था ये काम,
भा.उ.क.मौसम विज्ञान संस्थान देते हैं परिणाम ।
अभी देशभर में 40 डॉप्लर मौसम रडारों नेटवर्क,
भविष्य में रडारों की संख्या सौ होगी करेंगे वर्क ।





आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उठा हैं एक बड़ा कदम,
अभी स्वदेशी निर्मित बी.एफ.एस. ने भरा है दम ।
ये मानसून ट्रैकिंग, उड्डयन, चक्रवात की निगरानी,
आपदा प्रबंध, कृषि, जलमार्ग, रक्षा, बाढ़ न हानि ।
बी.एफ.एस. से आंधी, तूफान, बारिश की कहानी,
हाँ होंगे सतर्क मिलेगी खूब मदद बरतें सावधानी ।

गाँव हमारा-
शहर तुम्हारा



– डॉ. पी.आर. वासुदेवन
शेष, चेन्नै, तमिलनाडु

बड़ा भोला, बड़ा सादा, बड़ा सच्चा है ।
तेरे शहर से मेरा गाँव बहुत अच्छा है ।
वहाँ मैं मेरे पिता के नाम से जाना जाता हूँ ।
और यहाँ आधार कार्ड से पहचाना जाता हूँ ।
वहाँ मैं नदी, तालाब, ताल-तलैया में नहाता हूँ ।
यहाँ मैं बाथरूम में शावर में नहाता हूँ ।
वहाँ मैं शाम को खेतों-खलिहानों में घूमता हूँ ।
यहाँ में पार्क-बगीचे में टहलता हूँ ।
वहाँ गौ-माता घर-घर में पाली जाती है ।
यहाँ घर-घर में डॉगी पाले जाते हैं ।
वहाँ चौराहे पर चौपाल लगती है ।
यहाँ क्लबों-हब में शाम बिताई जाती है ।
वहाँ प्रकृति का अनमोल वरदान है ।
यहाँ मानव द्वारा फैलाया प्रदूषण है ।
वहाँ सभी तीज-त्योहार बड़े हर्षों-उल्लास से मनाए जाते हैं ।
यहाँ त्योहार केवल खानापूर्ति होती है ।
वहाँ जन्मदिन पर मिठाई बाँटी जाती है ।
यहाँ मोमबत्ती बुझाकर केक काटा जाता है ।
वहाँ फटे वस्त्रों में भी तन को ढका जाता है ।
यहाँ खुले बदन पे टेटू छापा जाता है ।
वहाँ कच्चा मकान, संयुक्त परिवार में सुसंस्कार है ।
यहाँ गगनचुम्बी इमारतें, बंगले और कुसंस्कार है ।
वहाँ अभिवादन नमस्कार राम-राम से होता है ।
यहाँ गुड-मार्निंग और गुड डे से होता है ।
वहाँ अतिथि देवों भव की भावना है ।
यहाँ अतिथि तुम कब जाओगे की याचना है ।
वहाँ दूसरों की सिसकियाँ भी सून ली जाती है ।

यहाँ चीखों की आवाजें भी दीवार से टकराती है ।
वहाँ पेड की ठंडी छाँव में आनंद, सुकुन मिलता है ।
यहाँ पेड़ ढूँढ़ने से भी नहीं मिलते हैं ।
यहाँ टूटी खटिया पर भी आराम से सो जाता हूँ ।
वहाँ शोर-शराबे, हंगामे में नींद खो देता हूँ ।
वहाँ तंग गलियों में भी आराम से निकल जाता हूँ ।
यहाँ सड़को पर यातायात के चक्रव्यूह में घंटो फँस जाता हूँ ।
मत समझो कम हमें कि हम गाँव से आए हैं ।
तेरे शहर के बाजार, मेरे गाँव ने ही सजाए हैं ।
वहाँ मर्यादा में सर सूरज की तरह चमकते हैं ।
चल आज हम फिर उसी गाँव में चलते हैं ।

पिता का फर्ज... !!

– श्री. प्रीतम कुमार साहू,
धमतरी, छ.ग.



(15 जून फादर्स डे)

पिता हूँ, पिता का दर्द जानता हूँ !
गम छिपाकर मुसकुराने का मर्म जानता हूँ... !!

छाले हो पाँव में कोई गम नहीं !
कंधे पर बैठाकर दुनिया घुमाना जानता हूँ... !!

जिम्मेदारियों ने जकड़ लिए है पर मेरे !
वरना ख्वाबों के शहर में उड़ना जानता हूँ... !!

अपनों की खुशी और अपनों का प्यार !
यही जिंदगी का मकसद मैं भी जानता हूँ... !!

मुफ्त में मिल जाएँगे नसीहते हजार !
अच्छी जिंदगी जीने का हर राज जानता हूँ... !!

जी रहे हैं हम भी बेहतर जिंदगी !
पर पिता हूँ, पिता का हर फर्ज जानता हूँ... !!



हमारी पीढ़ी के खोए हुए मूल्य



– डॉ. रामानुज पाठक,
सतना, म.प्र.

कभी रिश्तों में धड़कता था निस्वार्थ अपनापन,
आज वहाँ बसता है सुविधा का सौदागर मन ।
जो बातें होती थीं आत्मा की खामोश जुबान से,
अब वे लिखी जाती हैं इमोजी की बेजान जुबान से ।



सम्मान मिलता था उम्र, कर्म और सोच को,
अब झुकते हैं सिर बस दौलत की पोशाक को ।
शिक्षा का अर्थ था ज्ञान का उजियारा,
अब अंक है ईश्वर, और कोचिंग ही सहारा ।



सुंदरता थी जहाँ आत्मा की निर्मल झलक,
अब त्वचा के रंग पे टिकी है हर फलक ।
कभी सफलता थी श्रम और संघर्ष की थाती,
अब अनुयायियों की गिनती से तय होती जाती



बुद्धिमत्ता, जो कभी अनुभवों की धूप थी,
अब डिग्री के बिना बस एक अधूरा रूप है ।
संवेदनाएँ थीं कभी इंसानियत की पहचान,
अब उन्हें कहते हैं – कमज़ोर है ये इंसान ।



दयालुता, जो थी हृदय की भाषा निश्छल,
आज बन गई है संदेह का झूठा बहता जल ।
रिश्ते, जो थे आत्मा के पवित्र दस्तावेज़,
अब लिखे जाते हैं स्वार्थ के संक्षिप्त संदेश ।
गोपनीयता थी कभी निजता की शरण,
अब सत्य साबित करने को खोती है दरपन ।

दोस्ती थी कभी जीवन की असली पूँजी,
अब बन गई है ज़रूरत की एक मौसमी तिज़ोरी ।

सत्य जो कभी था धर्म का दीप जलाता,
अब वह असुविधा है – जिसे हर कोई दबाता ।
मूल्यांकन होता था इरादों की रोशनी से,
अब मापते हैं हम सबकुछ लोगों की गिनती से ।

क्या यही विरासत देंगे हम आनेवाली पीढ़ी को ?
या फिर थामेंगे वे मूल, जो जोड़े थे कभी मानवता को ?

चलो लौट चलें उन सच्चे मूल्यों की ओर,
जहाँ दिल बोले, और आत्मा हो सरगम का शोर ।
जहाँ प्रेम हो निष्कलंक, और सोच हो निष्कपट,
जहाँ इन्सानियत हो प्रथम, और आडंबर रह जाए क्षीणपट ।

आज के गाँव

– श्री. संदीप सृजन,
उज्जैन, म.प्र.



खेत और खलिहान से, हुई लापता मेड़ ।
गाँवों की चौपाल पर, मिले न बूढे पेड़ ।।

हरियाली है खेत में, लेकिन नहीं है हर्ष ।
सपनों के सौदागरी, लील रही है वर्ष ।।

गाँवों की दहलीज पर, पड़े शहर के पाँव ।
पेड़ कटीले हो गये, हुई लापता छाँव ।।

अब गाँवों में है कहाँ, वे दिलवाले लोग ।
फसलों का जिनने किया, जनहित में उपयोग ।।

बिन पेड़ों के गाँव में, झुलस गये हैं रूप ।
अब तो हरदम ही मिले, आँगन पसरी धूप ।।

पीपल, बरगद, नीम भी, रहे नहीं गंभीर ।
चंचल और चपल हुई, शीतल मंद समीर ।।

जरूरत से ज्यादा चतुराई

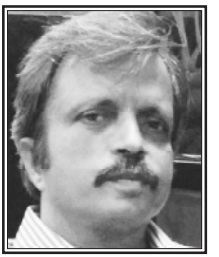
– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़



सामाजिक रीति–रिवाजों को छोड़
जिसने भी की जरूरत से ज्यादा चतुराई,
तो समझ लीजिए उनकी नीयत में है ढिठाई,
वह सत्य की राह पर चलना नहीं चाहता,
संवैधानिक तरीके से मचलना नहीं चाहता,
झूठ और फ़रेब रग रग में होगा,
वक्त आ जाये तो वतन को देगा धोखा,
गर कहे अपने मुख से मेरा काम चोखा,
ऐसों पर फिर हम करें क्यों भरोसा,
पिरोई कहानी पर धोखा मिलता है अक्सर,
ईमानदारी के चोले में लिपटा हुआ
वो हो सकता है चोर, तस्कर,
अंधा यकीन से,
खुद के न बनाये मशीन से,
हरपल रहने होंगे सावधान,
नैतिकता के चोले में डाकू दे सकता है ज्ञान,
जो संतुष्ट नहीं देश के संविधान से,
प्रगति पथ पर तत्पर ज्ञान व विज्ञान से,
जो भूल गया हो नियम व कायदा,
आँखों में अंधा हवस और फायदा,
जरूरत से ज्यादा चतुराई
राहों को मोड़ सकता है,
तर्क वितर्क का रास्ता छोड़ सकता है,
करनी होगी वतन की हर वक्त निगहबानी,
सतर्क रहो हमेशा न आ जाये कोई परेशानी ।

शोभा चाँदी की

– श्री. राजेंद्र चौहान,
वडोदरा, गुजरात



होते सब गहने सोने के, पायल पर शोभा चाँदी की ।
मधुर-मधुर-सी छम छम बाजे, पैरों में आभा चाँदी की ।
पाजेब कहें नूपुर घुँघरू, मंजीर पैंजनी या तोड़ा ।
झुनक पैजना जेहर झाँझर, अंदु तोड़िया पग का जोड़ा ।
झाँझन पैंजन और पैजनी, नेवर पैजनिया चाँदी की ।
मधुर मधुर-सी छम छम बाजे, पैरों में आभा चाँदी की ।
पादकटक घंटिका कहती, पाजेब़ झाँझड़ी कहलाती,
एंकलेट का नाम धारकर, पश्चिम में भी है मुस्काती ।
पायजेब या पादकीलिका, है सुंदर गहना चांदी की ।
मधुर-मधुर-सी छम छम बाजे, पैरों में आभा चाँदी की ।
हंपी से इतिहास जुड़ा है, पहने थे इसको नर नारी ।
रंग-रूप भी अलग-अलग थे, गहना था ये सबसे भारी ।
सोना सारे तन का गहना, अरुणाभा पग में चाँदी की ।
मधुर-मधुर-सी छम छम बजती, पैरों में आभा चाँदी की ।
सोलह शृंगारों में पायल, अपनी ही महता रखती है ।
छमछम की आवाजें मधुरिम, प्रियतम के मन को हरतीं हैं ।
बाली झुमका कंगन सोना, पर पायल शोभा चाँदी की ।
मधुर-मधुर-सी छम छम बाजे, पैरों में आभा चाँदी की ।

मीठा दर्द

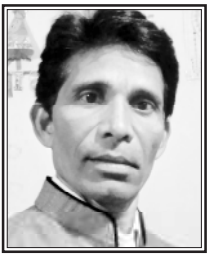
– श्री. टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला',
घोटिया-बालोद, छत्तीसगढ़



'पापा ! कैसे चल रहे हैं आप ? पैर में चोट लगी है क्या ?'
'चोट... ! नहीं तो... !'
'दर्द है लगता है, आपके पैर में ?'
'हाँ... बेटा ! एक मीठा दर्द !'
'मीठा दर्द ! क्या कुछ चुभा है पाँव में ?'
'हाँ, कल गाँव गया था ना । काँटा तो चुभा है, पर दर्द मीठा है !
'दर्द भी मीठा होता है पापा; वो कैसे ?'
'हाँ । अपने घर की बाड़ी के बेर पेड़ का काँटा है ।'

मेरे देश की पावन धरती

– श्री. अशोक पटेल 'आशु',
शिवरीनारायन, छत्तीसगढ़



मेरे देश की पावन धरती तुझको सौ-सौ बार नमन
तुझ पर मैं बली-बलि जाऊँ, कर लूँ नित-नित वंदन ।
निश दिन तुम उपकार करती ये ऋण कैसे चुकाऊँ
बस इतना मैं कर सकता हूँ, तुझ पर शीश झुकाऊँ ।
अपनी गोद सदा न्योछावर करती, ममता तू लुटाती
अपना पुत्र समझ के सबको, अपने हृदय से लगाती ।
तू ममता की आँचल से, सब पर शीतलता बरसाती
शस्य श्यामला सुजला सुफला, सबको तू ही दे जाती ।
तू धन्य है दयामयी है माँ, विराट स्वरूप माँ वरदानी
तू सब पे करुणा बरसाती कहलाती जन-कल्याणी ।
तेरा भाल अचल हिमालय रहे, अखंड तेरा नाम रहे
चाँद-सूर्य सा दैदिप्यमान अखिल विश्व गुरु धाम रहे ।
तू धर्म गुरु तू विश्व गुरु तू ज्ञान-विज्ञान में अग्रणी रहे
तू विश्व विजेता, अद्वितीय तेरा नाम अग्र पंक्ति में रहे ।



मंजिल

– श्री. अवनीश कुमार गुप्ता 'निर्द्वंद', प्रयागराज, उ.प्र.

राहों में मिले हम-तुम,
मंजिलें थीं अलग-अलग ।
सफर का था रंगीन मौसम,
पर नजर थी मंजिल पर ।
क्षणिक है मंजिल पाना,
पर सफर का आनंद कहाँ ?
अगर न देखें वो घटाएँ,
न करें हृदय रसपान ।
मंजिल का क्या फायदा,
जो सफर से दूर करे ।
चलो सफर को बना लें,
चलती-फिरती मधुशाला ।
पल तो आएगा ही,
जब मंजिलें होंगी पास ।
तब तक साथ में चलें,
और सफर का लें मज़ा ।
तुम अपनी राह पर चलो,
हम अपनी राह पर चलें,
मिलेंगी मंजिलें जब,
सफर की यादें संग रह जायेंगी ।



पेड़ ही पेड़ लगाओ

– श्री. भूपसिंह 'भारती', नारनौल, हरियाणा

जग में जीने की खातिर,
भाई ! पौधे पाँच लगाओ ।
सूखी और वीरान धरती को,
फिर से हरा-भरा बनाओ ।।

धरती को हम रखें हरी-भरी,
बन के सच्चे माली ।
फल-फूलों से लदी रहे,
हमारी एक-एक डाली ।
फिर क्यों करें नज़रें कड़वी,
हमने काट-छाँट मचाई ।।

गहरी शीतल छाया दें,
और दें हम अन्न-पानी ।
जीव-जंतु, संतान सभी हैं,
ना समझें कभी पराए प्राणी ।
कभी न इनकी कदर न की,
फिर भी गला कटवाते रहे ।।

नहीं समझ ये तुम पाओ,
हम धरती के आभूषण ।
पर्यावरण को शुद्ध करें हम,
करके दूर प्रदूषण ।
पेड़ करते हैं सबका पोषण,
अब शोषण को रुकवाओ ।।

सब बातों को छोड़ो अब,
मिलकर शपथ उठाओ ।
पेड़ों की रखवाली करो,
पेड़ ही पेड़ लगाओ ।
कहते हैं ''भारती'' – पेड़ लगाकर,
इनका संताप मिटाओ ।।



जय भारतमाता

– श्री. गौरीशंकर वैश्य विनम्र, खनऊ, उ.प्र.

जय भारतमाता देवि रूप ।
भावना स्वदेशी अपनाकर
भारत ने पाया नव स्वरूप ।

जन-जन में जागा स्वाभिमान,
निर्मित करता नित कीर्तिमान,
सुन नाम शत्रु भी उठे काँप,
बल-शौर्य नहीं पा रहे भाँप,

जल-थल-नभ की सेना सशक्त
नतमस्तक होते महाभूप ।

गोली का गोले से उत्तर,
आतंकी को मारें घुसकर,
अब 'शठे शाठ्यम्' सिद्ध मंत्र,
फल-फूल रहा शुभ लोकतंत्र,

चहुँमुखी प्रगति अद्भूत अपूर्व
जग चकित देखकर छवि अनूप ।

पद मिला वैश्विक महाशक्ति,
जन-गण में व्यापी राष्ट्रभक्ति,
सब साथ-साथ, सबका विकास,
छाया समृद्धि का शुचि प्रभास,

घर-घर सुख की पहुँचीं किरणें
पट गए, मिट गए अंधकूप ।
भारत ने पाया नव स्वरूप ।

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான்

சபரி பேலஸ், 193, இரண்டாவது அக்ரஹாரம்,
சேலம்-636001. & 0427-4265414 0427-4552100
Website : https://shabari.in

வாணி விகாஸ் – ஓர் பார்வை .....

உங்களின் கேள்விகளுக்கு இதோ எங்கள் பதில்கள் .....

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்குரிய விண்ணப்பப் படிவங்கள் சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானின் உறுப்பினர்களுக்கு மட்டுமே வழங்கப்படும். வருடாந்திர உறுப்பினர் கட்டணம் ரூ.100/-

வாணி விகாஸ் தேர்வு எதற்காக நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் என்பதின் பொருளிலேயே இந்த வினாவிற்கான விடை இருக்கிறது. ஹிந்தி பேசத் தெரியாதவர்களை ஹிந்தியில் பேசவைப்பதே வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நோக்கமாகும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானால் நடத்தப்படுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு வாய்மொழித்தேர்வா அல்லது எழுத்துத்தேர்வா ?

பேச்சாற்றலை வளர்ப்பதே வாணி விகாஸின் கொள்கையாகும், எழுதுகின்ற வேலை இதில் கிடையாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான குறைந்தபட்ச வயது என்ன ?

எட்டு (8) வயது பூர்த்தியடைந்த அனைவரும் வாணி விகாஸ் தேர்வில் பங்கேற்கலாம். வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நிலை தேர்வில் பங்கேற்பவர்கள் விண்ணப்பத்துடன் தங்கள் பிறப்பு சான்றிதழ் நகலினை கட்டாயம் இணைக்க வேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான அடிப்படை கல்வித் தகுதி என்ன ?

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கென அடிப்படைக் கல்வித் தகுதி ஏதும் தேவை இல்லை.

வாணி விகாஸ் தேர்வு எந்தெந்த மாதங்களில் நடைபெறுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு ஜனவரி, ஏப்ரல், ஜூலை மற்றும் அக்டோபர் மாதங்களில் நடைபெறுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள் எத்தனை நிலைகளைக் கொண்டது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வானது எட்டு நிலைகள் கொண்டது.

வாணி விகாஸ் தேர்விற்கு தனியான பாடப்புத்தகம் உள்ளதா ?

வாணி விகாஸ் எட்டு நிலைகளுக்கும் தனித்தனியே பாட புத்தகங்கள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியுமா ?

ஆம். வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியும். ஒரே சமயத்தில் இரண்டு நிலைகளுக்கு விண்ணப்பிக்க இயலாது. நேரடியாக இரண்டாவது அல்லது அதற்கு அடுத்த நிலைக்கோ விண்ணப்பிக்க இயலாது. இரண்டாவது நிலையிலிருந்து எட்டாவது நிலை வரை விண்ணப்பிப்பவர்கள் தாங்கள் தேர்ச்சி பெற்ற முந்தைய நிலையின் 10 இலக்க தேர்வு எண்ணை (10 Digit Exam Register Number) தேர்வு விண்ணப்பத்தில் தெளிவாக எழுதி அனுப்பவேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மையங்கள் எங்கெங்கு உள்ளன என்று தெரிந்து கொள்ளலாமா ?

வாணி விகாஸ் தேர்வில் குறைந்தது 30 மாணவர்கள் இருந்தால் உங்கள் இடத்திலேயே தேர்வு மையம் அமைக்கப்படும். அதற்கும் குறைவாக 10 முதல் 29 வரை உள்ள நிலையில் தேர்வுமையக் கட்டணமாக ரூ.500 செலுத்த வேண்டும். **அவ்வாறான நிலையில் மற்றவர்களிடம் பயிலும் ஒரு சில மாணவர்கள் எவ்வித முன்னறிவிப்பின்றி தங்கள் தேர்வு மையத்தில் பங்கேற்பார்கள்.** தேர்வுமையக் கட்டணத்தை எக்காரணத்தைக் கொண்டும் திருப்பித் தர இயலாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் சான்றிதழ் உள்ளதா ?

ஆம், உள்ளது. வாணி விகாஸ் தேர்வு முடிந்து 30 நாட்களுக்குள் தேர்வு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் 60 நாட்களுக்குள் சான்றிதழ் அனுப்பி வைக்கப்படும். தேர்வு முடிவுகள் https://shabari.in-ல் வெளியிடப்படும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படும் ?

சபரியால் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட அனுபவமிக்க ஆசிரியர்களால் தேர்வு நடத்தப்படும்.

இத்தேர்வுக்கான மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளதா ?

பாட புத்தகத்தின் கடைசிப்பக்கத்தில் மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மாணவர்களுக்கு பயனுள்ளதா ?

ஹிந்தியின் இமாலய வளர்ச்சி மற்றும் பயனுள்ள பயிற்சியில் மாணவர்கள் நிச்சயம் பலன் பெறுவர்.

புத்தகக் கட்டண விவரம் :

புத்தகத்தின் பெயர்	தொகை	புத்தகத்தின் பெயர்	தொகை
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00	வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00	வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00	வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00	வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00

புத்தகக் கட்டணம் செலுத்துவது எப்படி ?

புத்தகக் கட்டணத்தை https://shabari.in என்கிற எங்களது இணையதளத்தின் வாயிலாக மட்டுமே செலுத்தவும்.

வாணிவிகாஸ் தேர்வுகளுக்கு (ஜனவரி [அ] ஏப்ரல் [அ] ஜூலை [அ] அக்டோபர் மாதங்களுக்கான தேர்வுகளுக்கு) குறைந்தபட்சம் ஒரு முகவரி (சபரி IDயில்) 10 மாணவர்கள் இருந்தால் மட்டுமே விண்ணப்பங்கள் ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.



महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

तिरुनील नक्क नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

क्या गलत था उसमें करने से अब क्या ही हो गया ?
सोच ना पाए गलती क्या है मेरी ऐसा मैंने क्या कर दिया ?
बात बढ़ाने का मौका ही नहीं मिला झेंपती रह गई थी वह पत्नी
जीने लायक नहीं रही अब तुम मेरे संग कार्य ही तुमने ऐसा है किया
पूछ रही हो तुम मुझसे कि ऐसा मैंने क्या गलत काम किया ?
एक बार कह दिया जो कहीं दूर तेरे साथ रहना नहीं है
शिव महादेव उनसे बड़ा कुछ इस जग में बिलकुल नहीं है
संग मेरे रहने लायक नहीं रह गई है अब तुम निकल जा कहीं चली जा ।

अपने पति के इस व्यवहार से बिलकुल टूट गई थी वह पत्नी
संग नहीं गई अपने पतिदेव सहित अपना घर वह अबला
ठहर गई वह मंदिर में शिव के साथ शिव से कर विनती
अपने पति संग पूजा कर रही थी महादेव शिव महान कि वह तब
शिव की मूर्ति पर गिर गई थी कहीं से तब एक बड़ी मकड़ी
अपने बच्चों पर एक मकड़ी गिर जाए तो करती क्या एक माँ ?
फूँक फूँक कर मकड़ी को अलग कर देती वह प्यारी माँ
यही तो किया था यह भक्तिन भी बनकर एक प्यार भरी माँ ।

घर गए सीधे बिन रुके कहीं गुस्से में तिरुनीलनक्क नायनार
पत्नी का नहीं किया कभी कहीं कोई खबर लेट गए घर आकर
शिवलिंग पर फूँकना सह नहीं गया उसे भक्त से रहा नहीं गया
अर्धांगिनी को त्याग कर भी उनका गुस्सा तब भी उतर नहीं गया
सपने में आए महादेव महेश्वर शिवजी अपना रूप दिखाएँ
जिस जगह वह फूँकी थी उसे कर हर कहीं बनी रही मकड़ी का सूजन
समझ गए अपनी गलती समझ पाए शिव महान की महानता ।

आँखें खुल गई अभी बात उनको मालूम हो गई अब सभी
सुबह उठकर गए नायनार संपूर्ण मन से नहा धोकर वे मंदिर
मंदिर के एक कमरे के नीचे बैठी थी पत्नी अपने पीठ के बल पर
सारी घटना का बात वर्णन कर उन्होंने तब उससे माफी माँगी
सुनाए तब वे साश्चर्य अपने सपने में महादेव जो समझाए
घर ले आए तब अपनी पत्नी को भक्ति के रूप उसमें देख पाए
दोनों मिलकर करने लगे महादेव की आराधना अपनाये
फैलने लगी यह खबर हर और आज उसी की तरह लोग सुन पाए ।

तिरुचात्तमंगलम नगर के एक ब्राह्मण शिवभक्त थे तिरुनीलनक्क नायनार
शिव की पूजा आराधना सहित शिव भक्तों की करते रहे सेवा
शिव महान के अनेक मंदिर जाकर आए वहाँ तिरुज्ञान संबंध
लाए थे अपने साथ तिरु नील नक्क नायनार को भार्या सहित
खबर पाकर बना दिया था उनके आगमन को एक बड़ा त्योहार
सानंद सबका स्वागत कर खिलाए उन सबको घर ले जाकर
तिरुज्ञान संबंध को अपने घर अपने साथ रखकर किया उपचार
तिरुनीलनक्क और उनकी पत्नी को वेदमंडप पर स्थान देकर ।

भक्तों का हृदय तब मिल गया एक दूसरे के दुर्लभ दर्शन पाकर
तिरुज्ञान संबंध चले गए शिव भक्ति को चालू रखने का उपदेश देकर
शिव भक्तों की सेवा कर शिव की भी आराधना करते रहे दोनों
शिव भक्ति में तल्लीन रहकर जीवन चल रहे थे पति-पत्नी दोनों
तिरुज्ञान संबंध की शादी में भाग लेने गए शिव भक्ति दोनों
शिव ज्योति के दर्शन कर मंजिल को पा लिए वे दोनों
शिव ज्योति में मिलकर शिव बन गए पति पत्नी दोनों
भक्ति मार्ग की पवित्रता भक्ति की शक्ति दिखाकर शिवचरण पाए दोनों ।

शिव भक्ति से भरे रहे, नित तिरुनीलनक्कर ।
शिव ज्योति उसमें मिलकर, शिव बने नायनार ।।



दो कविताएँ

-श्री. महेन्द्र मद्धेशिया,
सिद्धार्थनगर, उ.प्र.

परीक्षा कक्ष

कमरे में
कई पंक्तियाँ हैं ।
हर पंक्ति में, लकड़ी से बनी
दोनों ओर से घिरी कुछ डेस्क ।
डेस्क के सामने कुर्सियाँ,
और कुर्सियों पर बैठे हुए हैं
अंतर्द्वंद्व से जूझते विद्यार्थी ।
सभी शांत हैं -
इतने शांत कि पड़ोसी की भी
साँसों की आहट तक सुनाई दे ।
पर भीतर, अंतर्द्वंद्व का शोर
इतना तीव्र कि
किसी और की आवाज़
कानों तक पहुँचती ही नहीं ।
ऐसा लगता है, जैसे हर कोई अकेला है,
और इस मरुभूमि-जैसे कमरे से
छुटकारा चाहता है ।
पर मरुभूमि
और विद्यार्थियों से भरे इस बंद कमरे में
एक अंतर है -
तपिश तो एक-सी है,
पर आशाएँ भिन्न ।
मरुभूमि में
फसल लहराए या न लहराए,
पर इस बंद कमरे में बैठे
विद्यार्थियों के बीच,
उम्मीदें सदैव जीवित रहती हैं -
नए कीर्तिमान स्थापित करने की ।

****

संशय के धनुष पर

कमरे में
पंक्तियाँ नहीं -
रणभूमि की रेखाएँ हैं ।
हर डेस्क एक युद्धस्थल,
हर विद्यार्थी अर्जुन -
धनुष थामे, पर संशय में डूबा ।
कुर्सियाँ नहीं, तपासन हैं -
जहाँ बैठा है एक थका हुआ योगी,
अपने ही मन को साधने की चेष्टा में ।
बाहर मौन है -
इतना घना कि जैसे समय ठहर गया हो ।
पर भीतर ?
मन के भीतर एक चक्रव्यूह घूम रहा है,
प्रश्न पत्र नहीं,
जैसे धर्म का प्रश्न है ।
यह कोई परीक्षा नहीं,
यह कर्म का परीक्षण है ।
यहाँ अंक नहीं बाँटते,
यहाँ निर्णय होते हैं -
कौन टिकेगा संघर्ष में,
कौन बचेगा आत्म-संशय में ।
आशाएँ केवल अंक नहीं चाहतीं -
वे स्वत्व की पुष्टि चाहती हैं,
कि मैं हूँ, और मैं बढ़ सकता हूँ ।
यह परीक्षा कक्ष नहीं,
यह भीतर का कुरुक्षेत्र है -
जहाँ हर विद्यार्थी,
अपने ही संशयों से
एक महाभारत लड़ रहा है ।

एक पानी मिला

– श्री. केशव शरण, वाराणसी, उ.प्र.

अच्छा हुआ कि
एक पानी मिला
प्रचण्ड गर्मी से व्याकुल
पेड़ों को
पौधों को
बड़ी राहत दे गए बादल
गड्ढ़ों में
इकट्ठा हो गया
दो दिनों के लिए जल
जिससे प्यास बुझाएँगे
पशु–पंछी सब
तापमान गिरना
सबके लिए ख़ुशनुमा हुआ
मौसम फिर कड़ा होगा
पेड़–पौधों
पशु–पंछियों
और हमारे लिए भी
तो उससे क्या अब !

****

बरसात जल्दी आए

लगता है
बरसात आएगी
और सब दिक़्क़तें
दूर हो जाएँगी



सही है
इस तीखी धूप
और गर्म हवा से
बड़ी राहत होगी
पर बरसात क्या
अपने साथ अपनी दिक़्क़तें लेकर
नहीं आएगी
बाढ़, कीचड़, मक्खी, मच्छर ?
लेकिन हमें अच्छी लगती है हरियाली
भरा पोखर और बहता निर्झर
और दिन बदराए
सो, चाहते हैं हम
बरसात जल्दी आए !



मैं हार नहीं सकती, ना ही हारूँगी ।

– डॉ. अलका अग्रवाल, जयपुर, राजस्थान

विपदाएँ आती हैं, तो बेशक आएँ ।
है उन्हें चुनौती, मुझको जरा झुकाएँ ।
विपदाओं को मैं, विपदा ना मानूँगी ।
मैं हार नहीं सकती, ना ही हारूँगी ।
बाधाएँ तो आती ही हैं, आएँगी ।
पथ की कठिनाई, चोटिल कर जाएँगी ।
साहस खोकर, कायर ना बन पाऊँगी ।
मैं हार नहीं सकती, ना ही हारूँगी ।
हो कोई चुनौती, रोक नहीं पाएगी ।
संकल्प शक्ति के, आगे झुक जाएगी ।
दृढ़ हूँ, मैं, आगे बढ़ती ही जाऊँगी ।
मैं हार नहीं सकती, ना ही हारूँगी ।
हो विजय पराजय, कुछ भी इस जीवन में ।
नैराश्य न होगा, मेरे विजयी मन में ।
निष्काम कर्म मैं, करती ही जाऊँगी ।
मैं हार नहीं सकती, ना ही हारूँगी ।



भगवान

– श्री. पूनम जैन अग्रवाल 'चाँदनी',
अहमदाबाद, गुजरात

रौंदी मिट्टी का ढेर नहीं मैं,
हवा के झोंके से उड़ जाऊँ–
'भ' से भूमि हूँ मैं संपूर्ण ।।

बादल का एक टुकड़ा नहीं मैं,
बरस जाऊँ किसी आँगन में –
'ग' से गगन हूँ मैं अनंत ।।

मंद पवन का झोंका नहीं मैं,
उडा लाऊँ कुछ तिनके कुछ धूल–
'व' से वायु हूँ मैं प्राण रक्षक ।।

टिमटिमाते दीए की लौ नहीं मैं,
बुझ जाऊँ दीए की बाती संग–
'अ' से अग्नि हूँ मैं दाहक ।।

झरझर बहती धारा नहीं मैं,
समा जाऊँ किसी सरिता में –
'न' से नीर हूँ मैं जीवनदायक ।।

संपूर्ण सृष्टि के हम हैं विधाता,
मिलकर बनते हैं भगवान ।
रुष्ट एक भी हो जाए फिर,
मानव का नहीं है कल्याण ।

'पंचतत्व' भी हम कहलाते,
हमसे हुआ सब का निर्माण ।
सर्वत्र हमारी पूजा होती,
सब में हम हैं विद्यमान !!



उनके नैना जैसे जादू

– श्री. अमित पाठक शाकद्वीपी,
बोकारो, झारखण्ड

उनके नैना जैसे जादू,
सब को मोहे जाए,
झील सरिस हाय इन नैनन में
मन यूँ गोत लगाए ।।

जितना देखें उतना सोचें,
फिर भी समझ न पाए,
सादगी से सुन्दरता को
देती हाय लजाय ।।

मस्तक पर का टीका सुंदर,
बिंदी वरनी न जाय,
अधरन पर सजी लाली भी
मन को बड़ा लुभाय ।।

कंठन पर सजी मुक्तन की माला,
क्यों इतना इतराए,
तुने देकर स्पर्श तुम्हारा
ले लियो अंक लगाए ।।

इसी धुन में होकर बेसुध
चुनरी भी हर्षाए,
तभी तो गोरी लाज के मारे
दबी दबी मुस्काए ।।



अलबेला हुआ मौसम

– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर,म.प्र.

बादल गरजे ढम–ढम,
बूँदे बरसे छम–छम ।
बिजली चमके चम–चम,
बर्फ गिरी झम झमा झम ।
मेघ बजाएँ तबला,
टप–टप बरसे सरगम ।
देख इंद्रधनुषी छटा,
अलबेला हुआ मौसम ।
झूमे धरती अंबर,
बारिश हुई मनोरम ।
मुख पर गिरी शबनम,
हो गई आँखें नम ।
खिलखिलाता है जीवन,
नदियों का यह संगम ।
सूखे में बरसे जल,
लगे घाव पर मरहम ।
वर्षा हरती सब गम,
मस्ती में झूमे हम ।
कागज की नाव चली,
मोटर गाड़ी पम–पम ।
सतलज, रावी, झेलम,
नदिया सबकी हमदम ।
प्रकृति मुस्काएँ जब,
पीड़ा हो जाएँ कम ।



करूणामई माँ प्रकृति

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नै, तमिलनाडु

पक्षियों का गूँजें मीठा शोर,
हरियाली छाई हो चारों ओर,
झूमें वन उपवन लताएँ सारी,
महके फूलों की सुंदर क्यारी ।
करुणामई माँ प्रकृति मुस्काएँ
अपना दायित्व चलो निभाएँ,
पर्यावरण प्रदूषण को रोके,
जो करें गलती उसको टोकें ।
फैलाएँ हरित क्रांति सर्वस्व,
समझें शुद्ध पर्यावरण महत्व,
खुद भी संरक्षण में सहयोग करें,
प्लास्टिक का प्रयोग नहीं करें ।
आ गया देखो फिर कोरोना,
मुश्किल हुआ है अब जीना,
गंभीर रोगों का फैला आतंक,
चलो मिलकर मिटाएँ ये कलंक ।
शुद्ध जलवायु है अति आवश्यक,
क्यों बन रहे हैं हम प्रकृति भक्षक,
पेड़ों को कटने से चलो बचाएँ,
जनजीवन को खुशहाल बनाएँ ।
स्वच्छ हो जल व स्वस्थ हो जीवन,
बंद करें प्राकृतिक संपदा का दोहन,
प्रवाहित करती प्रकृति पंच प्राण,
आनंद से भरपूर हो सारा जहान ।



सपने मुझे जगाते हैं

– श्री. मीरा सिंह 'मीरा', बक्सर, बिहार

सोने देते नहीं चैन से
सपने मुझे जगाते हैं ।
मनमौजी हैं ये मतवाले
मेरी नींद चुराते हैं ।।

जब भी बैठूँ आँख मूँदकर
हौले से आ जाते हैं ।
परियाँ करती जहाँ बसेरा
अपने सँग ले जाते हैं ।।
आँखों में ये आँख डालकर
देर तलक बतियाते हैं...

दौड़ लगाते बादल पीछे
कहाँ उड़ाए जाते हैं ।
मुझको अपने पास बुलाते
दुनिया नयी दिखाते हैं ।।
जीवन दो पल रैन बसेरा
सपने मुझे बताते हैं...

बातें करते उजले कल की
गीत खुशी के गाते हैं ।
जादूगर लगते हैं सपने
दुख को दूर भगाते हैं ।।
दुख लगते हैं मुझे पराएँ
सपने जब भी आते हैं ।
सोने देते नहीं चैन से
सपने मुझे जगाते हैं ।।



पूरे गाँव ने देखा

– श्री. चन्द्रकांत खुंटे 'क्रांति', जांजगीर, छत्तीसगढ़

गाँव के बाहर में
कुछ लोग बात कर रहे थे
अब गाँव सड़क से जुड़ जाएगी
तो गाँव का विकास होगा
दुनिया के नक्शे कदम में चलने लगेगा
रोजी-रोजगार, जागरुकता मिलने लगेगा
उनमें थे, कुछ सत्ताधारी, कुछ कर्मचारी
तो कुछ इंजीनियर, ठेकेदार
उनमें से कुछ ने कसमें खाये
तो कुछ ने किया करार
विकास के पथ पर लाने अपरंपार
पर समय बितने लगा
आज पूरे दो वर्ष हो गए उसी जगह पर
फिर सब वही बात कर रहे थे
पूरे गाँव ने देखा, हो रहे विकास को
उसमें जुड़े हर एक व्यक्ति खास को
जागरुकता तो आई लोगों के सोच में
जानने लगे खानेवाले नोंच-नोंच के
जो लोग रह गए थे अनपढ़
वह भी समझने लगे लीपा-पोती को
प्रगति पथ में कौन खड़े है ?
विचार रहे निज भाग खोटी को ।।



योग हमारी है पहचान

– श्री. शालिनी श्रीवास्तव
'सनशाइन', गोरखपुर, उ.प्र.

पहला सुख निरोगी काया,
बाकी सब इस जग की माया ।
मूल मंत्र जीवन का योग,
योग करके रहें निरोग ।
प्रातःकाल कर प्राणायाम,
ईश्वर का फिर कर लें ध्यान ।
ओंकार के जाप से
तन-मन में ऊर्जा भरें ।
सूर्य नमस्कार करके फिर
योगाभ्यास प्रारंभ करें ।
अनुलोम-विलोम, भ्रामरी
वज्रासन, कपालभारती ।
हलासन, ताड़ासन, भुजंगासन,
धनुरासन, चक्रासन, सिद्धासन ।
नौकासन, शलभासन, पद्मासन,
विश्राम कर लें फिर शवासन ।
योग जिसने भी अपनाया,
स्वस्थ शरीर है उसनें पाया।
मोटापा घटा कर रोग भगाया,
तन मन निर्मल कंचन काया ।
संतुलित हो आहार विहार,
सदा जीवन उच्च विचार ।
योग हमारी है पहचान,
भारतीय संस्कृति की है शान ।
योग नहीं बस एक दिवस,
योग करें हम हर एक दिवस ।



शबरी

– श्री. सुव्रत दे,
सम्बलपुर, उड़ीसा

'शबरी' साहित्य में लिए समर्पण की ज्वाला,
गुंथती है अध्यात्म व दर्शन की माला ।
प्रेम सुधा से भरी लिखती हैं कथा,
हर व्यक्ति की हर लेती है व्यथा ।

नगर-नगर भ्रमती हैं रचनाएँ इसकी,
मुस्कुराहट में बदलती हैं हर सिसकी ।
काव्य, कथा, विचार-विचार,
जाग्रत करती हैं नवीन भाव अपार ।

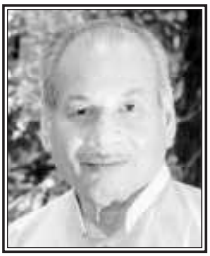
हर अंक से झरती है मधुर रस-धारा,
संवारती हैं यह जीवन हमारा ।
विचारों से भरती है नवीन उजास,
बुझाती हैं अतृप्त आत्माओं की प्यास ।

******

शबरी सु-रचनाओं की है व्रती,
आओ मिलकर उतारें इसकी आरती;
हर शब्द में बहे इसमें संजीवनी-धारा,
मर्म में बहाती है ज्ञान-अमृत सारा ।

नव-चेतना का तत्त्व लिए,
सद्भावनाओं की जलाती हैं दीयें ।
रचना में ऋषियों का है यश,
प्रेम-प्रीति व संस्कृति का है स्पर्श ।

साहित्य, दर्शन, धर्म-प्रेम से भरा
तेरा हर अंक हैं जैसे अमृत-धारा,
शबरी ! तू भावों की हैं वीणा,
हिन्दी साहित्य है अधुरा तेरे विना ।



संस्कार से चरित्र श्रेष्ठ बनते हैं

–श्री. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

उत्तम शिक्षा और अच्छे संस्कार
जीवन में विकास के मूल मंत्र हैं,
शिक्षा से ज्ञान विज्ञान बढ़ते हैं,
संस्कारों से चरित्र श्रेष्ठ बनते हैं ।

जो शिक्षित है उसे अज्ञानी की तरह
किसी से झुकने की ज़रूरत नहीं है,
सुसंस्कृत व्यक्ति को अनावश्यक
नतमस्तक होने की ज़रूरत नहीं है ।

बढ़ी हुई उम्मीदों और वास्तविकता
के बीच अंतर मानसिक तनाव होगा,
इन दोनों के बीच में जितना ज़्यादा
अंतर होगा उतना बड़ा तनाव होगा ।

हमें अपने दैनिक जीवन में हमेशा
वास्तविकता स्वीकार्य होनी चाहिये,
भौतिकता की चकाचौंध में फँस कर
व्यर्थ की उम्मीद नहीं करनी चाहिये ।

झूठ की तारीफ़ और सच का मज़ाक
कुछ ऐसा ही है आजकल का रिवाज,
झूठ को सच साबित कर लेते हैं लोग,
जानना कठिन है दुनिया का मिज़ाज़ ।

बीते हुये कल का पछतावा और आने
वाले कल की चिंता, दो ऐसे सत्य हैं,
जो हमारी वर्तमान की, खूबसूरती
व प्रसन्नता को भी चुरा ले जाते हैं ।

हर किसी को स्थितियों के अनुसार
जीवन में बदलाव करना होता है,
आदित्य परिस्थिति के अनुसार
कार्य कलापों को ढालना होता है ।



अज्ञात यात्रा

– श्री. सौम्या, कोवै, तमिलनाडु

उस दिन विमान में सपनों से
भरा था हर यात्री का मन,
नई ज़िंदगी की थी खुशी ।
लौट रहे थे अपनों के पास,
लेकर नई शुरुआत की आस ।
किसी ने सोचा था, शुरू होगी नौकरी,
किसी को था घरवालों से मिलने का चाव ।
खुशियों से भरे थे सबका मन,
जिस उड़ान से आने थे नए जीवन,
वही बन गया आख़िरी अंत उन सपनों का ।
एक क्षण में सब कुछ छीन लिया,
सपनों का सफर वहीं थम गया ।
पता नहीं हमें कब होगी हमारी
अंतिम घडी, इसलिए हमें खुश रहना है
हमेशा, हर क्षण को जीना है हँसी से ।
सब झगड़े भूलकर, एक साथ मिलकर
अपने आप और औरों को खुश रखें ।



मेरी विश्वास

– श्री. गंगा
सुवेदी,
विराट नगर, नेपाल

मैं कहाँ ढूँढूँ
उस परिंदे को
जो खुशहाल ज़िंदगी
जीकर उड़ चला है –
न जाने कहाँ ।
यहाँ तो तरस रही है
एक झलक को
अनेक ज़िंदगियाँ ।
ठहरी हुई है
मन–मन में
आग की सैलाब–सी ।
मुस्कुराहटों के पीछे
छुपी है गहरी
वेदना ।
ख़ुद को पाने की चाह
खो गई कहीं ।
मैं कैसे कहूँ –
लौट आएगी वो ?
मुझे ही मालूम नहीं ।
जो मेरी तरफ हैं निगाहें,
आशाएँ –
इतना निश्चित मानो –
मैं हारी नहीं हूँ...
अब भी ।



सुस्वागतम

– श्री. भाऊराव
महंत,
बालाघाट, म.प्र.

आ रहा बारिश का मौसम
स्वागतम... ! सुस्वागतम... !!
आज तक चुपचाप थी अब,
कूक कोयल ने लगाई ।
कर्णप्रिय ध्वनि सुन सहज ही,
दामिनी भी मुस्कुराई ।
देखने मुस्कान को अब,
आ रहा है मेघ हरदम... !
स्वागतम... ! सुस्वागतम... !!
चल रहीं शीतल हवाएँ,
पत्तियों को चूमते अब ।
वायु के मृदु स्पर्श से नित,
वृक्ष लगते झूमते अब ।
कर दिया वातावरण
गुंजित पपीहा छेड़ सरगम... !
स्वागतम... ! सुस्वागतम... !!
हर रही हैं बदलियाँ अब,
ग्रीष्म ऋतु की उष्णता को ।
आपतित हो वृष्टि, भू की–
है बुझाती तृष्णता को ।
सौम्यता का उष्णता से,
है अनूठा हाय ! संगम... !
स्वागतम... ! सुस्वागतम... !!



सपना

– श्री. मोहित.जे. संतोष, श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

तू है जहाँ
मेरा दिल है वहाँ
तेरी ये मीठी बातें
चलाते मेरे दिन-रातें ।
तेरी जुल्फों में खोया हूँ
तेरे लिये मै रोया हूँ
दूर होते मेरी परेशानियाँ
दूर हो जाती है तनहाइयाँ ।
तू है मेरी जिन्दगी की रोशनी
तू ही है मेरी प्यारी संगिनी
तू बन चुकी है मेरी साँस
दिल ठहरता है तेरे पास ।
तेरे प्यार में जो डूबा
तू ही बनी है दिलरूबा
अब एक ही सपना है
तुझे जल्द ही अपनाना है ।



आज के रिश्ते

– श्री. महेश कुमार (हरियाणवी), महेन्द्रगढ़, हरियाणा

आया है ये वक्त कैसा
रक्त नहीं रक्त जैसा ।
बेटा आज बाप को ही
अर्थ समझाता है ।
चपर-चपर बोले
सुनता ना हौले-हौले ।
जननी के सामने ना
सर को झुकाता है ।
मौके की फ़िराक़ में है
राख खुद राख में है ।
तिनका-सा ज्ञान लेके
सीने को फूलाता है ।
धरती पे फैली बाहें
आसमान पे निगाहें ।
खुद का ही भार लेके
उड़ नहीं पाता है ।।



खुशियों की तलाश

– श्री. देवेन्द्र कुमार मिश्रा, जबलपुर, म.प्र.

खुशियों की तलाश व्यर्थ है
बाजार में थोड़ी बिकती हैं खुशियाँ
बाजार में बिकते हैं सामान
बाजार में होता हैं क्रय विक्रय
खुशियाँ तलाशी जाती है हृदय में
हृदय प्रसन्न है तो सब ठीक है
हृदय दुखी तो सब बेकार
खुशियों की तलाश अपने अंदर
दोस्त, रिश्ते, नाते, सब अच्छे लगेंगे
यदि तुम तलाश चुके हो खुशियाँ
जो तुम्हें मिलती हैं कठोर मेहनत से
एकाग्रता से, संतुष्टि से,
खुशियों की तलाश, किसी का साथ
सब कुछ अंदर की बात है ।

पाक प्रेमियों को मार धूल में मिलायेंगे



– श्री. ऋतुराज पाण्डेय 'ऋषि',
लखनऊ, उ.प्र.

बहुत हुआ है अब धैर्य न धरेंगे हम,
पाक प्रेमियों को मार धूल में मिलायेंगे ।
रहने कदापि नहीं देंगे देशद्रोहियों को,
चुन-चुन कर एक-एक को मिटायेंगे ।
किया यदि देशद्रोह मेरे देश भारत से,
तुम्हें फिर अपना पराक्रम दिखायेंगे ।
विषधारियों सा सदा डसते रहे जो देश,
कुचल के फन उन्हें सबक सिखायेंगे ।

****

कामना दया की हम कैसे उनसे करें जो,
माँस, मदिरा से थाल अपनी सजाते हैं ।
चीन, पाक का जो करते हैं गुणगान और,
खाके देश का हमारे छल कर जाते हैं ।
चले नहीं सत्य के जो मार्ग पर भूल के भी,
ऐसे साँप के सपोले हानि पहुँचाते हैं ।
निज स्वार्थ के लिए जो करते निकृष्ट कार्य,
नर रूप धरे भेड़िये ही कहलाते हैं ।



मैं क्यों कुछ कर ना सकूँ ?

– श्री. मानसींग पारगी 'मान',
दाहोद, गुजरात

मैं क्यों कुछ कर ना सकूँ ?
सारे जग में अँधियारा छाया है ।
अब रावण घर-घर आया है !
श्रीराम ने रावण मारा था ।
तो मैं घर-घर श्रीराम ही-
क्यों पैदा कर ना सकूँ ?
मैं क्यों कुछ कर ना सकूँ ?
क्यों त्यजूँ यह सुअवसर आया है !
जो श्रीराम ने ही बुलाया है ।
मैं संजीवनी बनकर के,
लक्ष्मण की पीर क्यों हर ना सकूँ ?
मैं क्यों कुछ कर ना सकूँ ?
वह सतयुग फिर से आया है ।
जनमन को फिर से भाया है ।
मैं नवजागृति का कर्णधार...
नवयुग की पुकार क्यों कर ना सकूँ ?
मैं क्यों कुछ कर ना सकूँ ?

हिम्मत है तो हिमालय भी आ जाएगा तेरे नीचे
साहस है तो सागर भी झुक जाएगा ठहर जाएगा तेरे पीछे
मन में जब तक धैर्य का वास है धरती तुम्हारे लिए खास है
अड़चन शाश्वत नहीं है यहाँ, मत रुको बढ़ते जाओ मंजिल तक तुम ।

हायकू

– डॉ. शारदा प्रसाद,
रामगढ़ कैंट, झारखंड



आद्रा नक्षत्र
नक्षत्रों में श्रेष्ठ
शुभ नक्षत्र
आद्रा नक्षत्र
खीर दालपुरी का
भोग लगाएँ

आद्रा नक्षत्र
खेती की शुरुआत
खुश किसान

आई बरखा
छपक–छई–छप
खेलें बालक

बादल आए
घनघोर घटाएँ
शोर मचाएँ

बरखा रानी
छम–छम बरसे
मन हरसे

बादल आए
घनघोर घटाएँ
शोर मचाएँ

बादल छाए
वन में नाचे मोर
हो के विभोर

बरसा आई
धरती मुस्कायी
हरी–भरी हो

बरखा आई
उफने नदी–नाले
बाढ़ लाई

रथ यात्रा की महिमा

चारों धामों में अत्यंत प्रसिद्ध, जगन्नाथ धाम अपनी अद्भुत रथ यात्रा के लिए जाना जाता है । आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को, पुरी में यह पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है और पूरा वातावरण ''जय जगन्नाथ'' के जयकारों से गूँज उठता है । भगवान जगन्नाथ, जो राधा और कृष्ण के युगल स्वरूप हैं, भक्तों को दर्शन देने के लिए गर्भगृह से निकलकर रथ पर सवार होते हैं । वे रास्ते में अपनी मौसी के घर भी मिलने जाते हैं, जो उनकी सहजता और सरलता को दर्शाता है ।

यह पवित्र यात्रा सभी भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण करती है । जगन्नाथ रथ यात्रा की महिमा दूर–दूर तक गाई जाती है, क्योंकि यह भगवान महाविष्णु का ही एक सुंदर और साक्षात् अवतार है । आस्था, विश्वास, श्रद्धा और प्रेम से परिपूर्ण भक्त अपना तन–मन प्रभु को अर्पित करते हैं । मालपुए का प्रसाद पाकर हर भक्त आनंद से भर उठता है और ''जय हो जय जगन्नाथ !'' कहता है । काठ की इस मूरत में भी एक जादूगर का दिल धड़कता है । हे जगन्नाथ ! अपनी कृपा की दृष्टि सब पर बनाए रखना और हर भक्त को भरपूर सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और अपार आनंद प्रदान करना । हर भक्त की अर्जी जगन्नाथ स्वामी स्वीकार करें !



नमस्कार !

साहित्य के एक सर्जक को, एक साहित्य-प्रेमी का विशेष अभिवादन स्वीकार हो ।

शबरी जैसी उत्कृष्ट और शिक्षा के मूल्यबोध से युक्त पत्रिका को देखकर मन आनंद से भर गया ।

जैसे कि आप जानते हैं कि साहित्य की दुनिया में सेवा देनेवाला साहित्यकार, निरंतर साहित्य की सेवा ही करता है । यदि आपको उचित लगे, तो शबरी की पत्रिका-रूपी कुटिया का दर्शन एवं समागम कर, मैं स्वयं को धन्य ! समझूँगा ।

मैं स्वयं भी एक साहित्यकार हूँ । अब तक मेरे द्वारा लिखी पाँच पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । जिसमें से मेरे दो काव्य-संग्रह को भारत सरकार, गृहमंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा संरक्षित भी की गई है ।

यदि मुझे, आप 'शबरी पत्रिका' से जोड़ते हैं, तो अपार प्रसन्नता होगी ।

साहित्यकार-समाजसेवी-

- श्री. पी. यादव 'ओज',
झारसुगुड़ा, ओडिशा

हिन्दी मासिक पत्रिका 'शबरी' पर समीक्षा

नाम : शबरी

प्रकार : हिन्दी मासिक पत्रिका

विषयवस्तु : साहित्य, संस्कृति, समाज, अध्यात्म

समीक्षा:

हिन्दी साहित्य जगत में 'शबरी' मासिक पत्रिका एक विशिष्ट स्थान रखती है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि भारतीय साहित्यिक चेतना, सांस्कृतिक विरासत और समकालीन सामाजिक चिंतन का सशक्त माध्यम है ।

'शबरी' का नाम ही रामायण की उस प्रतीकात्मा भक्त शबरी की स्मृति को संजोता है, जो प्रतीक्षा, श्रद्धा और समर्पण की मिसाल है । उसी भावभूमि पर यह पत्रिका पाठकों के समक्ष साहित्य की सुधा वर्षा करती है ।

मुख्य विशेषताएँ :

1. साहित्यिक समृद्धि : पत्रिका में कविताएँ, कहानियाँ, लघु उपन्यास, समीक्षाएँ और संस्मरण का सुंदर संयोजन देखने को मिलता है । इसमें नवोदित और प्रतिष्ठित दोनों प्रकार के लेखकों की रचनाओं को समान आदर दिया जाता है ।

2. सांस्कृतिक झलक : शबरी भारतीय लोकसंस्कृति, परंपराओं और त्योहारों से जुड़े लेखों को भी स्थान देती है, जिससे पाठक अपनी जड़ों से जुड़ाव महसूस करते हैं ।

3. समकालीन सरोकार : यह पत्रिका सामाजिक मुद्दों, नारी विमर्श, पर्यावरण, शिक्षा और युवाओं की भूमिका जैसे गंभीर विषयों पर भी गहराई से प्रकाश डालती है ।

आपके शब्द और विचार हमारे लिए बड़े महत्वपूर्ण है । शबरी पत्रिका के बारे में और उसमें प्रकाशित रचनाओं के बारे में आपके विचार हम तक निरंतर पहुँचते रहें । साहित्य यात्रा में साथ देने की कृपा करें ।

4. अध्यात्म और दर्शन: अध्यात्मिक रचनाओं के माध्यम से यह पत्रिका पाठकों को आत्मचिंतन और जीवनमूल्य की दिशा में प्रेरित करती है ।

5. प्रस्तुति शैली : भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और संस्कारित होती है । चित्रांकन, कवर डिज़ाइन और मुद्रण गुणवत्ता भी प्रशंसनीय है, जो पाठकों को आकर्षित करती है ।

निष्कर्ष:

शबरी पत्रिका न केवल हिन्दी साहित्य प्रेमियों के लिए, बल्कि संस्कृति, अध्यात्म और समाज की समझ विकसित करनेवाले सभी पाठकों के लिए एक अनमोल धरोहर है । यह हिन्दी भाषा की गरिमा को बनाए रखने में अहम भूमिका निभा रही है ।

इस पत्रिका को नियमित पढ़ना न केवल साहित्यिक रस का अनुभव है, बल्कि यह आत्मविकास की एक सतत यात्रा भी है ।

– श्री. सुव्रत दे, सम्बलपुर, उड़ीसा

Dear Sir, With God's grace, I could find a soft copy of your latest magazine of June 2025 [06/2025]. I have gone through the magazine. Content wise, it is a nice collection of articles and poems etc. I pray to God almighty for all success to this nice magazine in our charming "Tamilnadu" State, which is having most ancient culture, traditions, heritages & legacies and Very-Very rich "Tamil literature". Thanks a lot to all of you, for publishing such an excellent magazine from Salem, Tamil Nadu. With warm regards,

- Sri. M.K. Singh,
Bangalore, Karnataka

नवांकुर



जन्मदिन

– लक्षिता श्रीधर,
ग्यारहवीं कक्षा, एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु

हर किसी के लिए अपना जन्मदिन बहुत विशेष होता है । प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह अपना जन्मदिन अपने परिवार के साथ अच्छे तरीके से मनाए । वह इस दिन का पूरे साल इंतज़ार करता है ।

जन्मदिन के दिन इंसान को ढेर सारी खुशियाँ मिलती हैं । जब कोई आकर उसे जन्मदिन की शुभकामनाएँ देता है या उसे कोई तोहफ़ा देता है, तो उसे लगता है कि वह बहुत विशेष व्यक्ति है ।

कहते हैं कि खुशियों में मिठाई बाँटने से ज़िंदगी में मिठास बढ़ती है । उसी तरह, जन्मदिन पर मिठाई बाँटने से भी साल भर खुशियाँ बढ़ती हैं ।

सबसे खास बात यह होती है कि जब माता-पिता सबसे पहले आकर आपको जन्मदिन की बधाई देते हैं और आपको प्यार से उठाते हैं, तो जो प्रसन्नता मिलती है, वह अमूल्य होती है । इस ख़ुशी का कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता ।

इसीलिए, हमें हमेशा अपना जन्मदिन हर्षोल्लास से मनाना चाहिए ।



कर्म

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै,
तमिलनाडु

मेरे उस बगीचे में
पापा ने लगाया था
एक सुन्दर सा पौधा
गुलाब का था मैंने सुना ।
पानी दे रहे थे प्यार से
पाल रहे बडे प्यार से
दिन चलने लगे वैसे
बढने लगा था पौधा ।
एक दिन न जाने
किस गुस्से में थे
पौधे को जड से फेंके
गुस्सा का था नतीजा ।
मैंने देखा उसे दूर से
लगा दिया बडे प्यार से
पानी दिया खूब प्यार से
बडा होने लगा फिर से ।
दिनों के बाद वह खिला
गुलाब का रूप था सुन्दर
मन मेरा बहुत खिलने लगा
कर्म अपना मुझे अच्छा लगा ।

नवांकुर – रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए । रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए । खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें । रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं ।

कृपया आयु प्रमाण-पत्र की प्रति साथ भेजें ।



दिशा और रक्षा

– शंकर वेंकटेश्वरन,
श्री कृष्णा आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज़, कोवै, तमिलनाडु

इस बार मैं एक ऐसी कहानी कहनेवाला हूँ, जो मैंने सुना और सच में हुई थी । लीबिया से अमर नाम का एक व्यक्ति हज के लिए हवाई जहाज केलिए तैयार था । लेकिन हवाई अड्डे पर सुरक्षा और देरी के वजह से उनकी उड़ान छूट गई । हवाई जहाज के अधिकारियों ने उनसे कहा कि, ''शायद हज आपके लिए नहीं लिखा है ।'' लेकिन अमर ने कहा कि, ''मेरा लक्ष्य हज करना है । अगर अल्लाह चाहेगा तो मैं हज करूँगा ।'' भगवान की कृपा से, जिस विमान से वह चूक गए थे, उसे यांत्रिक खराबी के कारण उसी हवाई अड्डे पर वापस उतरना पड़ा । उस वक़्त भी, विमान के पायलट ने अमर को अंदर जाने से मना कर दिया । विमान ने उसे फिर छोड़ दिया, लेकिन मशीन की खराबी के कारण फिर से वापस आ गया । इस बार पायलट ने कहा कि, ''यदि अमर विमान में नहीं होता तो मैं विमान नहीं उड़ाता ।'' फिर अमर विमान में सवार हो गया और उसे हज की प्राप्ति हुई । जो भी हमारे लिये लिखी हैं, यदि सारी दुनिया विरुद्ध भी हो, तो भी वे हमारे पास आएँगी ।

इस घटना को जानकर हमें **शैनन. एल. एल्डर** के शब्दों से यह समझ में आया कि, "When you get what you want, that's God's direction, and when you don't get what you want, that's God's protection".

यह तथ्य, दुनिया की हर एक इंसान की जिंदगी मैं होती रहती है ।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

पुत्तिका द्वारा लिखितं पत्रम्

सः बर्लिननगरस्य उद्याने एकां बालिकां पुत्तिका नष्टं कृत्वा रोदितां दृष्टवान् । सः अन्येषां इव न गच्छन् बालिकायाः समीपं गत्वा ''बाले ! किमर्थं रोदिसि'' इति पृष्टवान् । रुदनस्य कारणं ज्ञात्वा ''गच्छावः तत् पुत्तिकां अन्वेष्टुं'' इत्युक्त्वा सः तां बालिकां स्वेन सह नीत्वा अन्वेष्टुं आरब्धवान् ।

अन्वेषणं कर्तुं पूर्वं एव तमः आसीत् । अतः सः बालिकां प्रति ''अधुना अन्धकारः भवति । यत् अहं श्वः आगमिष्यामि, श्वः मिलित्वा अन्वेष्टुं शक्नुवः'' इत्युक्त्वा तां गृहं प्रेषितवान् ।

परदिने यदा सः प्रत्यागतवान् तदा सः बालिकायाः कृते एकं पत्रं दत्तवान् यत् पुत्तिकया लिखितम् इति कथ्यते, सा च स्वयमेव तत् पठितवती । पत्रे लिखितम् आसीत् यत् ''कृपया मा रोदितु । अहं जगत् द्रष्टुं यात्रां गच्छामि । शीघ्रमेव आगमिष्यामि । तावत्पर्यन्तं भवद्भ्यः प्रतिदिनं मम अनुभवान् लिखिष्यामि ।

परदिनात् आरभ्य सः नित्यं एकं पत्रं आनयित्वा तस्याः कृते दत्तवान् । प्रत्येकं दूरस्थभूमिकथैः, पुत्तिकायाः अद्भुतसाहसिककार्यक्रमैः च परिपूर्णम् आसीत् । सा बालिका अतिप्रसन्नतां प्राप्तवती ।

अन्ते एकस्मिन् दिने ''मम यात्राः समाप्ताः अहं श्वः आगमिष्यामि । दीर्घयात्राभिः मम रूपं किञ्चित् परिवर्तितं स्यात् । किन्तु तत् अहमेव । मां स्वीकुरु'' इति लिखितं पत्रं पाठित्वा सा पुत्तिकया आगमनं प्रीत्या प्रतीक्षते स्म । सा उद्यानं प्रति आगता । सः महाभागः अपि बालिकायाः कृते पूर्वं श्रुतप्रतीकसदृशं पुत्तिकां क्रीत्वा आगतः । यदा सः बालिकायाः कृते पुत्तिकां दत्तवान् तदा सा प्रेम्णा स्वीकृत्य आलिंगितवती ।

वर्धमाना सा अवगच्छत् यत् तेन महाभागेन यदुक्तं तत् सर्वं तस्याः सान्त्वनाय उक्तम् असत्यम् एव । परन्तु सः अन्येषां इव रुदतीम् अज्ञातां मां बालिकां तिरस्कृत्य न गतः । मां सान्त्वयितुं यत् दयालुतां सः दर्शितवान्, तत् मम मनसि महत् परिवर्तनं कृतवान्, महतीं प्रेम्णःप्रवर्तनं कृतवान् इति विचिंत्य सा अपि परस्य चिन्ता, कस्यचित् उपेक्षां न कुर्वती सत्स्त्रीरूपेण वर्धिता ।

तदा एव सा पुत्तिकया अन्तः निगूढं फ्रांस *काफ्कायाः अन्तिमपत्रं आविष्कृतवती । तत्र लिखितम् आसीत् यत् – बालिके ! वयं यत् किमपि इच्छामः सर्वं नष्टं भवेत् । पुनः कदापि न लभ्यते । परन्तु स्नेह अन्यरूपेण अस्मान् अन्विष्य अवश्यमेव आगमिष्यति । इति

यद्यपि परिवर्तनम् अपरिहार्यम् अस्ति तथापि अस्मान् अप्रत्याशितदानानि नूतनानि आरम्भाणि च आनेतुं शक्नोति इति *फ्रांस काफ्का विश्वासयति स्म । तस्याः बालिकायाः अपि तथैव अभवत् । कदाचित् वयं यत् इच्छामः तत् नष्टं कुर्मः, परन्तु अन्यथा पुनः प्राप्तुं शक्नुमः इति ज्ञात्वा जीवनस्य परिवर्तनं निराशां च स्वीकुर्वितुं शिक्षेम ।

*फ्रांस काफ्का (Franz Kafka) (3 जुलाई 1883 – 3 जून 1924) प्रसिद्ध जर्मन भाषा लेखकः ।

தமிழழுது – தோற்பன தொடரேல்

– எம். ஸ்ரீதர், நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

குடிப்பிறப்பும், உயர்கல்வியும், உன்னதமான நோக்கமும், ஒருவருக்கு ஒருங்கே அமையுமானால் அவரது எதிர்காலம் மிகவும் வளமையானதாகவும், நன்மையானதாகவும் அமையும். உயர்ந்த குடியில் பிறந்தவர் அனைவரும் உயர்ந்து சிறந்து விளங்குகிறார்களா என்றால் அதை நாம் அப்படியே ஏற்றுக் கொள்ளவும் முடியாது. மகாத்மா காந்தியின் பேத்திக்கு ஆப்பிரிக்க நீதிமன்றம் தண்டனை வழங்கியதை நாம் அனைவரும் அறிந்திருக்கிறோம். வீடும் வசதியும் ஒருவருக்கு வழிவகைகளை காண்பித்து தரும்போதும் தன்னுடைய குணமும், நடத்தையுமே அவர்களுக்கு உயர்வை தரும். மனித வாழ்வில் கல்வியும், ஞானமும், செல்வமும் மிக மிக முக்கியமானவை. இவற்றால் மட்டுமே வாழ்க்கையை வளமாக செய்துவிடலாமா என்று கேட்டால் நிச்சயமாக முடியாது.

சரி ஒருவரை உயர்ந்தவராக ஆக்குவதில் மிக முக்கிய பங்கு வகிப்பது எது ? நமது முன்னோர்களும், அறிவியலாளர்களும், ஆராய்ச்சியாளர்களும், அனுபவமிக்கவர்களும் மிகத் தெளிவாக கூறியிருப்பது ஒருவரின் செயலே அவரை உயர்ந்தவராக்கும் என்பதாகும். உண்மைதான் ஒருவருடைய செயல்தான் அவருடைய தகுதியினையும் நிலையினையும் உலகிற்கு தெளிவாக எடுத்துச் சொல்கிறது. சிந்தனையில் தூய்மை மற்றும் செயலில் நேர்மை இருக்கும்போது வாழ்வு வளர்ந்து சிறக்கிறது.

செயலைத் தொடர்ந்து செய்யலாமா என்று கேட்கும் போது வெற்றியும் விரும்பத்தக்க பலன்கள் தரக்கூடிய செயல்களை தொடர்ந்து செய்யலாம். அதே நேரத்தில் தோல்வியை தருகின்ற செயல்களை தொடர்ந்து செய்யக் கூடாது. இதைத்தான் மிக அழகாக ஔவையார் அமுத தமிழில் **தோற்பன தொடரேல்** என்று சொல்லிச் சென்று இருக்கிறார். தோல்வியை தருகின்ற, தோல்வியை மட்டுமே தருகின்ற செயல்களில் நாம் நமது திறமையும், நேரத்தையும், இன்னும் மற்ற பொருட்களையும் விரயம் செய்யாமல், வெற்றி தருகின்ற செயல்களை தொடர்ந்து செய்வோம். வெற்றி பெறுவோம்.

தொடரும்...



அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருத்தருமபுரம்

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'

Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு



மாதர் மடப்பிடியும்மட வன்னமு மன்னதோர்
நடையுடைம் மலைமகள் துணையென மகிழ்வர்
பூதவினப் படை நின்றிசை பாடவு மாடுவர்
அவர் படர் சடைநெடு முடியதோர் புனலர்
வேதமோ டேழிசை பாடுவராழ்கடல் வேண்டிரை
இரைந் நுரை கரை பொரு துவிம்மி நின்றயலே
தாதவிழ் புனனை தயங்கு மலர்ச்சிறை வண்டறை
எழில் பொழில் குயில் பயில் தருமபுரம் பதியே !

- ஸ்ரீ சம்பந்தர் அருளிய
முதலாம் திருமுறைப் பாடல்

கர்வம் கவலையைத் தரும், ஆணவம் அழிவைத் தரும். தவறை உணர்ந்து உள்ளப்பூர்வமாக மன்னிப்பு வேண்டினால் இறையருள் சித்திக்கும் முதலான மேலான தத்துவங்களின் விளக்கமாக அமைந்துள்ளதே திருத்தருமபுரம் ஸ்ரீ யாழ்முறிநாதர் திருக்கோயில் அருள்வரலாறு.

அருள் வரலாறு :

முன்னொரு சமயம் திருக்கடையூரில் மார்க்கண்டேயனின் உயிரைப் பறிக்க முயன்ற யமதர்மனை ஈசன் எட்டி உதைத்தார். இதனால் நினைவிழந்தான் யமதர்மராஜன். இதன் காரணமாக உலகில் உயிரைக்கவர ஓர் ஆள் இல்லாததால் ஒருபுறம் பிறப்பு நிகழ்ந்து கொண்டே இருந்தது. இறப்பே ஏற்படவில்லை. ஆகையால் பூமியில் பாரம் அதிகரித்து. எனவே பூமாதேவி ஜகதீஷ்வரனிடம் சென்று யமதர்மனை நினைவுபெறச் செய்து, பிழைப்பித்து தமது பாரத்தை குறைத்து உதவும்படி வேண்டினாள்.

இதேசமயம் யமதர்மராஜனும் தமது தவற்றை உணர்ந்து இத்தலம் வந்து ஒரு தீர்த்தக் குளம் அமைத்து அதில் தினமும் நீராடி ஸ்ரீ சிவபெருமானை வழிபட்டுவந்தான். மனம் மகிழ்ந்த ஈசனும்

யமதர்மராஜன் முன்னிலையில் காட்சி கொடுத்து விரைவில் அவரை முன்புபோல் கடமையைச் செய்ய அருள்புரிவேன் என்று மறைந்தார். அதன்படி திருச்சி மாவட்டம் மணச்சநல்லூர் அருகில் உள்ள திருப்பைஞ்ஞீலி திருத்தலத்தில் யமதர்மராஜனை உயிர்ப்பித்து மீண்டும் உரிய காலத்தில் உயிர்களைக் கவரும் பணியை வழங்கி அருளினார்.

யமதர்மராஜன் வழிபட்டு அருள்பெற்ற காரணத்தினால் இத்தலம் தருமபுரம் எனப்பெயர் பெற்றது, இறைவன் ஸ்ரீ தர்மபுரீஷ்வரர் ஆனார்.

யாழ்முறிநாதர் :

ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தப் பெருமான் ஆலயங்கள் தோறும் சென்று அருட்பதிகங்கள் பாடி வந்த பொழுது, ஸ்ரீ நீலகண்ட யாழ்பாணர் தமது மனைவியுடன் சம்பந்தப் பெருமானுடன் தல யாத்திரை மேற்கொண்டதோடு, அவரது பதிகங்களுக்கு இசையமைத்து அப்பதிகங்களை யாழ் இசைத்து இசையோடு பாடிவந்தார்.

இவ்வாறு இருக்கும்பொழுது ஒருநாள் ''நாம் யாழ் இசைத்து ராகத்தோடு பாடுவதால்தானே சம்பந்தரின் பதிகங்கள் சிறப்படைகின்றன'' என்ற கர்வம் வந்தது.

ஆணவம் அழிவிற்கு அடையாளம் அல்லவா ? தமது அடியவர் கர்வப்பட்டு வீணாவதை கடவுள் பொறுப்பாரா ? ஆகையால் அவருக்கு உரிய பாடம் புகட்ட எண்ணிய ஈசன் இத்தலத்தில் சம்பந்தப்பெருமான் பாடிய பதிகத்தை நீலகண்ட யாழ் பாணர் தமது யாழில் இசையுடன் பாடமுடியாமல் செய்தார். எவ்வளவோ முயன்றும் பாணரால் அப்பதிகத்தைத் தமது யாழில் கொண்டுவர முடியவில்லை. உடனே தமது தவற்றை உணர்ந்த நீலகண்ட யாழ் பாணர் தமது யாழினை முறித்து உயிர்விடத் துணிந்தார்.

அதுசமயம் கையில் யாழுடன் தோன்றிய ஈசன் அழகுற யாழிசைக்க, அம்பிகை தேனினும் இனிய குரலில் பாடி இருவருமாக சம்பந்தப் பெருமானுக்கும், பாணருக்கும் திருக்காட்சி தந்தனர்.

நீலகண்ட யாழ் பாணரும் தமது தவற்றை உணர்ந்து, மன்னிப்பு வேண்டி முன்புபோல சம்பந்தரின் பதிகங்களுக்கு இசையமைத்து யாழ் வாசித்துப் பாடிவரத் துவங்கினார். இதன் காரணமாகவே இத்தலத்தில் சம்பந்தர் பாடிய பதிகத்தின் ராகம் யாழ்முறிப்பண் ஆகியது.

மேற்கண்ட நிகழ்ச்சி காரணமாக இத்தலத்து ஈசன் ஸ்ரீ யாழ்முறிநாதர் எனவும் சிறப்பிக்கப்பட்டார்.

சிறப்புக்கள் :

1. ஸ்ரீ நீலகண்ட யாழ் பாணரின் அவதாரத்தலம் இது ஆகும். இவர் பாணர் குலத்தைச் சார்ந்தவர். யாழ் என்னும் இசைக் கருவி வாசிப்பதில் வல்லவர். ஆகையால் நீலகண்ட யாழ்பாணர் என்று அழைக்கப்பட்டார்.
2. பணி இடை நீக்கம் செய்யப்பட்டவர்கள், பதவி இழந்தவர்கள், வேலை தேடி அலைபவர்கள் இத்தலத்து ஈசனை வணங்கினால் மீண்டும் பதவிபெற்று, வேலை கிடைத்து நிறைவாழ்வு வாழலாம்.
3. ஸ்வாமி சந்நிதி முகப்பில் ஒருபுறம் சம்பந்தர் பாட, நீலகண்டர் யாழ் இசைக்க, அருகில் அவரது மனைவி நிற்பது போன்றும், மறுபுறம் சம்பந்தர், யாழுடன் நீலகண்ட யாழ்பாணர் மற்றும் அவர் அருகில் அவரது மனைவி நிற்பது போன்று சுதைச் சிற்பங்கள் அழகுற காட்சி தருவதைக் காணலாம்.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

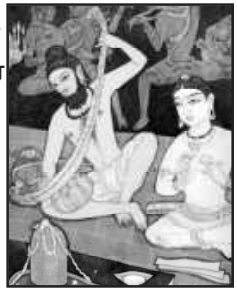
இறைவன்	: ஸ்ரீ தர்மபுரீஷ்வரர் (எ) ஸ்ரீ யாழ்முறிநாதர்
இறைவி	: ஸ்ரீ மதுரமின்னம்மை (எ) ஸ்ரீ தேனமிர்தவல்லி
தலமரம்	: வாழைமரம், வில்வமரம்
தீர்த்தம்	: தரும தீர்த்தம், பிரம தீர்த்தம்
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	: பிரம்மா, யமன், நீலகண்ட யாழ் பாணர் முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ சம்பந்தர், ஸ்ரீ அப்பர், ஸ்ரீ சுந்தரர் முதலான தேவார ஆசிரியர் மூவராலும் பாடப்பட்ட சிறப்போடு, சேக்கிழாரும் தமது பெரியபுராணத்தில் இத்தலத்தைச் சிறப்பித்துப் பாடியுள்ளார்.

தரிசன காலம் :

காலை 07.00 மணி - பகல் 01.00 மணி வரை
மாலை 05.00 மணி - இரவு 09.00 மணி வரை



தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ யாழ்முறிநாதர் தேவஸ்தானம்,
தருமபுரம் - 609 602,
காரைக்கால் அஞ்சல்,
புதுச்சேரி மாவட்டம்,
பாண்டிச்சேரி மாநிலம்.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் : 04368-226616

அமைவிடம் :

காரைக்காலில் இருந்து திருநள்ளாறு செல்லும் சாலையில் காரைக்காலில் இருந்து சுமார் 3 கி.மீ. தொலைவில் திருத்தருமபுரம் திருமுறைத் திருத்தலம் உள்ளது.

ஸ்ரீ தேனமிர்த வல்லி ஸமேத

ஸ்ரீ தர்மபுரீஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்... இணைத்திடுங்கள் இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

Shabari Siksha Samachar, Salem

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.06.2025. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

VANI VIKAS FIRST CONVOCATION CEREMONY

प्यारे शबरी स्नेही तथा विद्यार्थी,

नमस्ते । बड़े हर्ष तथा गर्व के साथ हम आपको शबरी के पहले दीक्षांत समारोह के लिए आमंत्रित कर रहे हैं । वाणी विकास की सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए आपके सारे विद्यार्थियों को गौरव प्रदान करने के लिए उनको हम दीक्षांत प्रमाण पत्र प्रदान करनेवाले हैं ।

अपने विद्यार्थियों के साथ हम आपको इस समारोह में भाग लेने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं । कृपया हमारे वेबसाइट **https://sansthan.shabari.org/** पर जाकर आवेदन पत्र भरने के साथ ₹1000/- का शुल्क भी 30 जुलाई, 2025 तक भेज दीजिए । हर छात्र को प्रमाण पत्र के साथ एक पुरस्कार भी दिया जाएगा ।

आपकी भागीदारी को यथाशीघ्र हमें सूचित करें । दीक्षांत समारोह का समय तारीख और स्थान यथाशीघ्र हम आपको सूचित करेंगे । आइए हम सब मिलकर भावी हिन्दी सेवियों का सम्मान करें ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !! - शबरी शिक्षा संस्थान, सेलम

அன்புள்ள சபரி நலம் விரும்பிகளுக்கும், மாணவர்களுக்கும் ஓர் அன்பான அழைப்பு !

வணக்கம். சபரியின் முதல் பட்டமளிப்பு விழாவிற்கு உங்களை அன்புடன் வரவேற்கிறோம் ! வாணி விகாஸின் அனைத்து நிலைகளிலும் தேர்ச்சி பெற்ற மாணவர்களைக் கௌரவிக்கும் விதமாக, அவர்களுக்குச் சான்றிதழ்கள் வழங்கிச் சிறப்பிக்க உங்களையும் அன்புடன் அழைக்கிறோம். இந்தச் சிறப்புமிக்க நிகழ்வில் மாணவர்களுடன் இணைந்து ஆசிரியர்களையும் மனதார வரவேற்கிறோம். நிகழ்ச்சியில் பங்கேற்க விரும்பும் மாணவர்கள் **https://sansthan.shabari.org/** என்ற சன்ஸ்தானின் இணையதளத்தில் விண்ணப்பத்தைப் பூர்த்தி செய்து, ₹1000/- கட்டணத்தை ஜூலை 30, 2025-க்குள் அனுப்பி வைக்குமாறு கேட்டுக்கொள்கிறோம். பங்கேற்கும் ஒவ்வொரு மாணவருக்கும் சான்றிதழுடன் ஒரு சிறப்பு பரிசும் வழங்கப்படும். தாங்கள் கலந்துகொள்வதை உறுதிப்படுத்துமாறு அன்புடன் கேட்டுக்கொள்கிறோம். விழா நடைபெறும் இடம் மற்றும் தேதி விரைவில் உங்களுக்குத் தெரிவிக்கப்படும். வாருங்கள், நாளைய ஹிந்தி சேவகர்களை கௌரவிப்போம் ! நன்றி.

ஜெய்ஹிந்த் ! ஜெய் ஹிந்தி !! - சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம்

Dear Shabari Community and Students,

Namaste. Shabari Siksha Sansthan, Salem is delighted to announce its First Convocation Ceremony for students who have successfully completed all the Vani Vikas examinations. We invite you to join us in honoring these dedicated students as they receive their well-deserved graduation certificates.

To participate, please register and pay a fee of ₹1000/- on our website, **https://sansthan.shabari.org/**, On or before July 30, 2025. Each graduating student will receive a certificate and a special gift.

The date and venue for the ceremony will be announced shortly. We eagerly anticipate your presence as we celebrate the future torchbearers of Hindi.

Jai Hind ! Jai Hindi !! - Shabari Siksha Sansthan, Salem

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi In Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்



- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

Shabari Siksha Sansthan, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

Posted at Salem HPO 636 001. July - 2025

Published on 5th July - 2025

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. :TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024 - 2026
Licenced to post without prepayment: TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।

Please quote your subscription number in all correspondance.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001

To _____

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Learner's Practical Hindi

480 PAGES
HARD BOUND

Just .....
₹250.00
Only
.....



SHABARI BOOK HOUSE
'Shabari Palace', 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
WhatsApp : 94431-65414
Landline Phone : 94433-65414, 98427-65414
email : gandhijiqa@gmail.com visit us @ www.shabari.org